Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

संत भजनावलि

संग्रहकर्ता

शिवनारायण टंडन

प्रकाशक

बालमन्दिर पटकापुर कानपुर

itization by American Academy of Indic Studies. AAIS(

itization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

संत भजनावलि

संग्रहकर्ता

शिवनारायण टंडन

प्रथमवार ३०००

प्रकाशक
ज्ञानमन्दिर पटकापुर कानपुर

मूल्य ।)

ation by American Academy of Indic Studies. AAIS

itization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

समर्पण !

साधु चरित सुभ सरिस कपासू।
निरस बिसद गुनमय फल जासू॥
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा।
वन्दनीय जेहि जग जस पावा॥

जो घर में रहते हुए भी महाराज जनक के समान विदेह हैं।
जो काम, क्रोध, लोभ और मोह को जीतने में संलग्न हैं।
जो धर्मात्मा हैं और पाप से रहित हैं।
जो ईश्वर भक्त हैं और सत्य के अनन्य पुजारी हैं।

--ऐसे साधु चरित, परम यशस्वी,
पूज्य बड़े भइया, लाला गोपालदास जी टंडन के करकमलों में यह 'भजनावलि' सादर, सप्रेम समर्पित है।

—शिवनारायण टंडन :

ation by American Academy of Indic Studies. AAIS

itization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

दो शब्द !

प्यारे पाठक,

यदि आपको अपने जीवन में, कभी एक ही पुस्तक को जीवनसाथी बनाने की आवश्यकता प्रतीत हो तो निःसंकोच, भजनावलि को, चिरजीवन-संगिनी बना डालिये।

इस निर्णय के लिए आपको कभी भी पछताना नहीं पड़ेगा।

इस नन्हीं सी पुस्तिका के गर्भ से भक्तहृदय पावन-कारिणी गंगधारा उमड़ रही है। इन थोड़े से पन्नों में सुख और शान्ति का स्वर्गीय संदेश मानसरोवर की विमल, धवल अगम्य, जलराशि की भांति भरा पड़ा है। इन ब्रम्हसूत्र के समान छोटे छोटे पदों द्वारा जो उपनिषद् के वाक्यों से कम माहात्म्य नहीं रखते, आनन्द और निर्वाण का अजस्र स्रोत वह रहा है जिसमें स्नान कर बड़े से बड़े पापी भी तर गये हैं। फिर पुण्यात्माओं की

zation by American Academy of Indic Studies. AAIS(U
तो बात ही क्या है ? इन भजनों का सत्संग थोड़ी ही देर के लिये सही, धरती के प्राणी को चार अंगुल ऊपर उठा देता है। संकलन करते समय, कम अज़कम मुझे तो ऐसा ही प्रतीत हुआ है।

तो आइये ! अपनी अपनी योग्यता, श्रद्धा, सामर्थ्य, और संस्कार के अनुसार, अपनी अपनी आत्मा की चिर-कालीन तृषा का निवारण कीजिये। जिनके पास लोटा है वे अपना लोटा भर ले जायँ। जिनके पास घड़ा है वे अपने घड़े को आकंठ भर लें। और जिनके हाथ छूंछे हैं वे नम्रता के साथ तनिक झुक कर चुल्लू भर हो पी लें। मीरा, सूर, तुलसी, नानक और कबीर हिन्दी-जगत के ही नहीं प्रत्युत विश्व के संत साहित्य के, गागर में भरे हुए सागर हैं। परमेश्वर एक है, परन्तु इन भक्त शिरोमणियों ने, अपनी अपनी रुचि और चित्त-वृत्ति के अनुसार उसे भिन्न भिन्न रूपों में पाया है। और विभिन्न नामों से उसका यशोगान किया है।

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS(US

भले ही शब्द विन्यास में अन्तर हो पर सन्तों का संदेश तो एक ही है :—

नर रैन बीति गई जाग जाग।
अब भव की तृष्णा त्याग त्याग।।
यह संसार सराय चलाचल।
क्यों भटकत है भाग भाग।।
विषयारस मृग तृष्णा पानी।
हरि के भजन सूं लाग लाग।।
नर रैन बीति गई जाग जाग।।

सचमुच, जो इस संदेश को कान देकर सुनेगा उसी का जीवन धन्य होगा। वही निर्वाण पद का अधिकारी बनेगा।

श्री हरिदासानुदास,
शिवनारायणटंडन

———

zation by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

मङ्गलाचरण

अंखड़ियाँ झाईं पड़ी, पन्थ निहारि निहारि ।
जीभड़ियाँ छाला पड़्या, नाम पुकारि पुकारि ॥

*   *   *

नैना नीझर लाइया, रहट बसै निस जाम ।
पपिहा ज्यों पिउ पिउ करै, कबरु मिलहुग राम ॥

*   *   *

नाथ एक वर मांग हूँ, मोहिं कृपा करि देहु ।
जनम जनम प्रभु पद कमल, कबहुं घटै जनि नेहु ॥

*   *   *

रामचन्द्र य[illegible] चहत अब मौन ।
तुलसी के [illegible] दाजि[illegible] अबहीं तुलसी सौन ॥

*   *   *

itization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

राग तिलंग

मन रे परसि हरि के चरण ।।टेक।।
सुभग सीतल कँवल कोमल, विविध ज्वाला हरण ।
जिण चरण प्रहलाद परसे, इन्द्र पदवी धरण ।
जिण चरण ध्रुव अटल कीने, राखि अपनी सरण ।
जिण चरण ब्रह्माण्ड मेटचो, नखसिखा सिरी धरण ।
जिण चरण प्रभु परसि लीने, तरी गोतम घरण ।
जिण चरण कालीनाग नाथ्यो, गोपलीला करण ।
जिण चरण गोबरधन धार्‌यो, इन्द्र को ग्रव हरण ।
दासि मीरा लाल गिरधर, अगम तारण तरण ।।

zation by American Academy of Indic Studies. AAIS(

राग छायानट

भज मन चरण कवल अविनासी ॥टेक॥
जेताइ दीसे धरण गगन विच, तेताइ सब उठ जासी ।
कहा भयो तीरथ ब्रत कीन्हे, कहा लिये करवत कासी ।
इण देही का गरब न करणा, माटी में मिल जासी ।
यो संसार बहर की बाजी, साँझ पड्याँ उठ जासी ।
कहा भयो है भगवा पहरयाँ, घर तज भये सन्यासी ।
जोगी होय जुगति नहिं जाणी, उलटि जनम फिर आसी ।
अरज करो अबला कर जोरे, स्याम तुम्हारी दासी ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, काटो जम की फाँसी ॥

itization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

राग प्रभाती

जागो बंसीवारे ललना, जागो मोरे प्यारे ॥टेक॥
रजनी बीती भोर भयो है, घर घर खुले किंवारे।
गोपी दही मथत सुनियत है, कँगना के झनकारे।
उठो लालजी भोर भयो है, सुर नर ठाढ़े द्वारे।
ग्वाल बाल सब करत कुलाहल, जय जय सबद उचारे।
माखन रोटी हाथ में लीनी, गउवन के रखवारे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सरण आयाँ कूं तारे॥

---

zation by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

४. राग झिंझोटी

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।
छांड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई।
संतन ढिक बैठि बैठि, लोकलाज खोई।
अँसुवन जल सींचि सींचि, प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेल फैल गई. आणँद फल होई।
भगति देखि राजी हुई, जगति देखि रोई।
दासी मीरा लाल गिरधर, तारो अब मोहीं॥

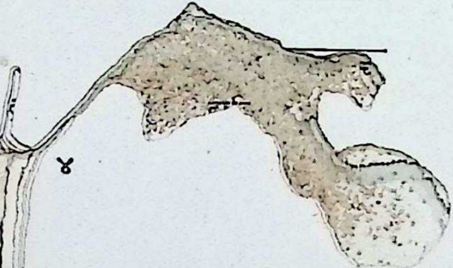

itization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

(५)

राग हमीर

वसो मोरे नैनन में नँदलाल ॥टेक॥
मोहनी मूरति साँवरी सूरति, नैणा बने बिसाल।
अधर सुधारस मुरली राजति, उर बैजंती माल।
छुद्र घंटिका कटि तट सोभित, नूपुर सबद रसाल।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भक्त वछल गोपाल॥

(६)

राग त्रिबेनो

निपट बंकट छबि अटके।
मेरे नैन निपट० ॥टेक॥
देखत रूप मदन मोहन को, पियत पियूखन मटके।
बारिज भवाँ अलक टेढ़ी [illegible] स अटके।
टेढ़ी कटि, टेढ़ी क[illegible] [illegible] टके।
मीरा प्रभु के रूप लु[illegible] गिरधर [illegible]र नट[illegible]॥

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

राग देस

म्हाँने चाकर राखो जी,
गिरधारी लाला चाकर राखो जी ॥टेक॥
चाकर रहसूं बाग लगासूं, नित उठि दरसन पासूं ।
बृन्दाबन की कुँज गलिन में, गोविन्द-लीला गासूं ।
चाकरी में दरसन पाऊँ, सुमिरन पाऊँ खरची ।
भाव-भगति जागीरी पाऊँ, तीनों बाताँ सरसी ।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, गल बैजंती माला ।
बृन्दाबन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला ।
ऊँचे ऊँचे महल बनाऊँ, बिच बिच राखूं बारी ।
साँवरिया के दरसन पाऊँ, पहिर कुसुम्बी सारी ।
जोगी आया जोग करन कूं, तप करने सन्यासी ।
हरि-भज[illegible]ये, बृन्दाबन के बासी ।
मीरा[illegible] रहो जी धीरा ।
[illegible]धी रात[illegible]नु दरसन[illegible]ं, जमुनाजी के तीरा ॥

itization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

राग माल कोस

श्री गिरधर आगे नाचूंगी ॥टेक॥
नाचि नाचि पिवरसिक रिझाऊँ, प्रेमी जन कूं जाचूंगी ।
प्रेमप्रीति की बाँधि घूंघुर, सुरत की कछनी काछूंगी ।
लोक लाज कुल की मरजादा, यामे एक न राखूंगी ।
पिव के पलँगा जा पौढ़ूंगी, मीरा हरि रंग राचूंगी ॥

(९)

राग राग श्री

रामनाम रस पीजै मनुआँ, रामनाम रस पीजै ॥टेक॥
तज कुसंग सतसंग बैठि नित, हरि चर्चा सुणि लीजै ।
काम क्रोध मद लोभ मोह [illegible] ाय दीजै ।
मीरा के प्रभु गिरध[illegible] भीजै ॥

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

राग छाया टोड़ी

सखी, म्हारो कानड़ो कलेजे की कोर ॥टेक॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, कुंडल की झकझोर ।
बृन्दाबन की कुंज गलिन में, नाचत नंद किशोर ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कँवल चित चोर ॥

(११)

राग खम्माच

मीरा मगन भई हरि के गुण गाय ॥टेक॥
साँप पिटारा राणा भेज्यो, मीरा हाथ दियो जाय ।
न्हाय धोय जब देखण लागी, सालिगराम गई पाय ।
जहर का प्याला राणा भेज्यो, अमृत दीन्ह बनाय ।
न्हाय धोय जब पीवण लागी, हो अमर अँचाय ।
सूल तेज राणा ने भेजी, दीज्यो मीरा सुलाय ।
साँझ भई [illegible] मानो फूल बिछाय ।
मीरा [illegible] बिघन हटाय ।
भ[illegible]न भाव [illegible]मस्त डोलै [illegible]गिरधर पै बलि जाय ॥

———

itization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

(१२)

राग पठमंजरी

मैं तो सावरे के रंग राची ।।टेक।।
साजि सिंगार बाँधि पग घुंघुरू, लोकलाज तजि नाची ।
गई कुमति लई साधु की संगति, भगतरूप भई साँची ।
गाय गाय हरि के गुन निसदिन, काल ब्याल सूं बाँची ।
उण बिन सब जग खारो लागत, और बात सब काँची ।
मीरा श्री गिरधरनलाल सूं, भगति रसीली जांची ।।

(१३)

राग हवीर

हरि मोरे जीवन प्रान अधार ।।टेक।।
और आसिरो नाहीं तुम बिन, [illegible] लोक मंझार ।
आप बिना मोहि क[illegible] ससार ।
मीरा कहै मैं दा[illegible] रा[illegible] बिसे[illegible]र ।।

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

राग गुनकली

मैं तो गिरधर के घर जाऊँ ।।टेक।।
गिरधर म्हारो साँचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ ।
रैंण पड़े तब ही उठि जाऊँ, भोर भये उठि आऊँ ।
रैंण दिना वाके संग खेलूं, ज्यूं ज्यूं वाहि रिझाऊँ ।
जो पहिरावे सोई पहिरूँ, जो दे सोई खाऊँ ।
मेरी उणकी प्रीत पुराणी, उण बिन पल न रहाऊँ ।
जहाँ बैठावे तितहीं बैठूं, बेचै तो बिक जाऊँ ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बार बार बलि जाऊँ ।।

itization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

राग मांड

माई री मैं तो लीयो गोबिन्दो मोल ।।टेक।।
कोई कहै छानै कोई कहै चौड़े, लियो री बजंता ढोल ।
कोई कहै मुंहघो, कोई कहै सुहघो, लियो री तराजू तोल ।
कोई कहै कारो, कोईकहै गोरो, लियोरी अमोलिक मोल ।
याही कूं सब लोग जाणत है, लियो री आँखी खोल ।
मीरा कूं प्रभु दरसण दीज्यौ, पूरब जनम की कोल ।।

(१६)

राग पीलू

पग घुंघुरू बाँध मीरा नाची रे ।।टेक।।
मैं तो मेरे नारायण की, आपहि हो गई दासी, रे ।
लोग कहैं मीरा भई बावरी, न्यात कहैं कुलनासी, रे ।
बिष का प्याला रा[illegible]हाँसी, रे ।
मीरा के प्रभु गिरध[illegible] रे ।।

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

राग देस

दरस बिन दूखण लागे नैण ।।टेक।।
जब के तुम बिछुरे प्रभु मोरे, कबहुं न पायो चैन ।
सबद सुनत मेरी छतियाँ काँपै, मीठे मीठे बैन ।
बिरह कथा कासूं कहूं सजनी, बह गई करवत अैन ।
कल न परत पल हरि मग जोवत, भई छमासी रैण ।
मीरा के प्रभु कब रे मिलोगे, दुख मेटण सुख दैण ।।

(१८)

राग जैजैवन्ती

जा पौढ़ी पलँगा में मैं तो, पलक लगी पल में पिउ आए ।
मैं जु उठी प्रभु आदर देण कूं, जाग पड़ी प्रभु ढूंढ़ न पाए ।
और सखी पिउ सोय गमाँए, मैं जु सखी पिव जाग गमाए ।
आज की बात [illegible]ती, सपना में हरि लेत बुलाए ।
बस्त एक [illegible] सखि मन के भाए ।।

[illegible]

itization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

१९. राग आनन्द भैरों

सखी मेरी नींद नसानी हो।
पिय को पंथ निहारत, सिगरी रैंण बिहानी हो ॥टेक॥
सब सखियन मिलि सीख दई, मन एक न मानी हो।
बिनि देख्याँ कल नाँहि पड़त, जिय ऐसी ठानी हो।
अंगि अंगि व्याकुल भई, मुखि पिय पिय बानी हो।
अन्तर वेदन बिरह की, वह पीड़ न जानी हो।
ज्यूं चातक घन कूं रटै, मछरी जिमि पानी हो।
मीरा व्याकुल विरहणी, सुध बुध बिसरानी हो ॥

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

राग पहाड़ी

घड़ी एक नहिं आवड़े, तुम दरसण बिन मोय।
तुम हो मेरे प्राण जी, कासूं जीवण होय।
धान न भावै, नींद न आवै, विरह सतावै मोहि।
घायल सी घूमत फिरूँ रे, मेरो दरद न जाणै कोय।
दिवस तो खाय गमाइयो रे, रैण गमाई सोय।
प्राण गमायो झूरताँ रे, नैण गमाया रोय।
जो मैं ऐसा जाणती रे, प्रीति कियाँ दुख होइ।
नगर ढंढोरा फेरती रे, प्रीत करो मत कोइ।
पंथ निहारो डगर बुहारूं, ऊभी मारग जोइ।
मीरा के प्रभु कब रे मिलोगे, तुम मिलियाँ सुख होइ ॥

itization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

राग जोगिया

हेरी मैं तो दरद दिवाणी होइ ।
दरद न जाणै मेरो कोइ ॥टेक॥
घायल की गति घायल जाणै, की जिण लाई होइ ।
जौहर की गति जौहरी जाणै, की जिन जौहर होइ ।
सूली ऊपर सेज हमारी, सोवणा किस विधि होइ ।
गगन मँडल पै सेज पिया की, किस विधि मिलणा होइ ।
दरद की मारी बन बन डोलूं, बैद मिल्या नहिं कोइ ।
मीरा की प्रभु पीर मिटेगी, जब बैद साँवलिया होइ ॥

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(२२)

राग विहाग

करम गति टारे नाँहि टरे ।।टेक।।
सतवादी हरिचंद से राजा, नीच घर नीर भरे ।
पाँच पाँडु अरु सती द्रौपदी, हाड़ हिमालै गरे ।
जग्य कियो बलि लेण इन्द्रासन, सो पाताल धरे ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बिष से अमृत करे ।।

(२३)

राग मांड

नातो नाम को मोसूं तनक न तोड़्यो जाइ ।।टेक।।
पाना ज्यूं पीली पड़ी रे, लोग कहें पिंड रोग ।
छाने लाँघण मैं किया रे, राम मिलण के जोग ।
बाबल बैद [illegible] पकड़ दिखाई म्हारी बाँह ।
मूरिख [illegible] क कलेजा माँह ।
[illegible]

igitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA

जा बैंदा घर आपणे रे, मेरो नाव न लेइ ।
मैं तो दाधी बिरह की रे, तूं काहे कूं दारू देइ ।
माँस गले गल छीजिया रे, करक रह्या गल आहि ।
आँगलिया री मूदड़ी, म्हारे आवण लागी बाँहि ।
रहो रहो पापी पपीहा रे, पिव को नाम न लेइ ।
जो कोइ बिरहणि साम्हले, पिव कारण जीव देइ ।
खिण मंदिर खिण आगणे रे, खिण खिण ठाढ़ी होइ ।
घायल ज्यूं घूमूं सदारी, म्हारी बिथा न बूझे कोइ ।
काढ़ि कलेजो मैं धरूँ रे, कौवा तू ले जाइ ।
ज्याँ देसा म्हारो पिव बसै, वे देखै तू खाइ ।
म्हारे नातो नाव कोरे, और न नातो कोइ ।
मीरा व्याकुल विरहिणी रे, पिया दरसण दीजो मोइ ॥

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

(२४)

राग गूजरी

या मोहन के मैं रूप लुभानी ।।टेक।।
सुंदर बदन कमलदललोचन, बाँकीचितवन मंदमुसकानी ।
जमना के नीरे तीरे धेन चरावै, बंशीमें गावै मीठीबानी ।
तन मन धन गिरधर पर वारूँ, चरणकमल मीरा लपटानी ।।

(२५)

राग कमोद

बरजी मैं काहू की नाहिं रहूँ ।।टेक।।
सुनौरी सखी तुम चेतन होइके, मन की बात कहूँ ।
साध संगति करि हरि सुख लीजै, जगसूं दूर रहूँ ।
तन धन मेरे सब ही जावो, भलि मेरो सीस लहू ।
मन मेरो लागो [illegible] सेती, सब का मैं बोल सहूँ ।
मीरा के [illegible] र सरण गहूँ ।।

[illegible]

ization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(२६)

राग श्याम कल्याण

हरि तुम हरो जन की भीर ।।टेक।।
द्रोपता की लाज राखी, तुरत बाढ़्यो चीर ।
भक्त कारण रूप नरहरि, धर्यौ आप सरीर ।
हिरणाकुश मारि लीन्हे, धर्यौ नाहिं न धीर ।
बूड़तो गजराज राख्यौ, कियो बाहर नीर ।
दासी मीरा लाल गिरधर, चरण कँवल पै सीर ।।

(२७)

राग मलार

डारि गयो मनमोहन पासी ।।टेक।।
आँबाकी डाल कोइल इक बोलै, मेरो [illegible] अरु जगकेरिहाँसी ।
बिरह की मारी मैं वन [illegible] रत ल्यूं कासी ।
मीरा के प्रभु हरि अ[illegible]ास [illegible] न त[illegible] दासी ।।

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

(२८)

राग सोहनी

जोगी मत जा मत जा मत जा,
पाँइ परूँ मैं चेरी तेरी हौं ।।टेक।।
प्रेम भगति को पैंड़ो ही न्यारा, हमकूं गैल बता जा ।
अगर चंदण की चिता बणाऊँ. अपणे हाथ जला जा ।
जल बल भई भस्म की ढेरी, अपणे अंग लगा जा ।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, जोत में जोत मिला जा ।।

(२९)

राग जोगिया

पीया बिनि रह्यौ न जाइ ।।टेक।।
तन मन मेरो पिया पर वारूँ, बार बार बल जाइ ।
निस दिन [illegible] सेत्र की, कबर मिलोगे आइ ।
मीरा [illegible] री कंठ लगाइ ।।

[illegible] —अ[illegible]—

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(३०)

राग धानी

मोहि लागी लगनगुरु चरनन की ॥टेक॥

चरन बिन कछुवै नाहिं भावै, जग माया सब सपनन की ।
भव सागर सब सूखि गयो है, फिकर नहीं मोहि तरननकी ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आस वही गुरु सरनन की ॥

(३१)

राग कलिंगड़ा

सुनी हो मैं हरि आवन की अवाज ॥टेक॥

म्हैल चढ़े चढ़ि जोऊँ मेरी सजनी, अब आवै महाराज ।
दादर मोर पपइया बोलै, कोइल मधुरे साज ।
उमग्यो इन्द्र चहूँ दिसि बरसै, दामणि छोड़ी लाज ।
धरती रूप नवा नवा धरिया, इन्द्र [illegible]ण के काज ।
मीरा के प्रभु हरि अ[illegible]राज ॥

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

(३२)

राग सारंग

या व्रज में कछू देख्यो री टोना ।।टेक।।
ले मटुकी सिरचली गुजरिया, आगेमिले बाबानंदजीके छोना ।
दधिको नाम बिसरि गयोप्यारी, लेलेहुरीकोइ स्यामसलोना ।
बृन्दाबन की कुंज गलिन में, आँख लगाइ गयो मनमोहना ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सुन्दर स्याम सुघर रसलोना ।।

(३३)

राग दुर्गा

हो गये स्याम दूइज के चंदा ।।टेक।।
मधुबन जाइ [illegible] बनिया, हम पर डारो प्रेम को फंदा ।
मीरा के [illegible] सेता [illegible] नेह परो कछु मंदा ।।
[illegible]

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(३४)

रा ग जौनपुरी

सखीरी लाज वैरण भई ॥टेक॥
श्रीलाल गोपाल के संग, काहे नाहिं गई ।
गठिन क्रूर अक्रूर आयो, साजि रथ कहं नई ।
रथ चढ़ाइ गोपाल लैगो, हाथ मींजत रही ।
कठिन छाती स्याम बिछरत, बिरह तें तन तई ।
दासि मीरा लाल गिरधर, बिखर क्यूं न गई ॥

(३५)

राग पीलू

तेरो मरम नहिं पायो रे जोगी ॥टेक॥
आसन माँडि गुफा में बैठो, ध्यान हरी को लगायो ।
गल बिच सेली हाथ हाजरियो [illegible] रमायो ।
मीरा के प्रभु हरि अ[illegible]यो ॥

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

३६. राग हमीर

नहिं ऐसो जनम बार बार ।।टेक।।

का जानूं कुछ पुण्य प्रगटे, मानुसा अवतार।
बढ़त छिन छिन घटत पल पल जात न लागे बार।
बिरछ के ज्यूं पात टूटे, बहुरि न लागे डार।
बढ़त छिन छिन घटत पल पल जात न लागे बार।
बिरछ के ज्यूं पात टूटे, बहुरि न लागे डार।
भव सागर अति जोर कहिये, अनंत ऊँची धार।
राम नाम का बाँध बेड़ा, उतर परले पार।
ज्ञान चोसर मंडी चौहटे, सुरत पासा सार।
या दुनिया [illegible] रची बाजी, जीत भावै हार।
साधु [illegible] सेता [illegible] करत पुकार।
दास [illegible] वणा दिन चार।।

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(३७)

राग सूहा

चालो मन गंगा जमुना तीर ।।टेक।।
गंगा जमना निरमल पाणी, सीतल होत सरीर ।
बंसी बजावत गावत कान्हों, संग लिया बलबीर ।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, कुंडल, झलकत हीर ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल पैसीर ।।

(३८)

राग पील्

रमइया बिन रह्योइ न जाय ।।टेक।।
खान पान मोंहि फीको सो लागै, नैणा रहे मुरझाइ ।
बार बार मैं अरज करत हूँ, रैण [illegible] दिन जाय ।
मीरा कहै हरि तुममिलिया [illegible] जाय ।।

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

(३९)

राग जौनपुरी

मैं गोविंद गुण गाणा ।।टेक।।
राजा रूठै नगरी राखै, हरि रूठ्यां कहँ जाणा ।
राणै भेज्या जहर पियाला, इमिरत करि पी जाणा ।
डबिया में भेज्या भुजंगम, सालिगराम करि जाणा ।
मीरा तो अब प्रेम दिवाणी, साँवलिया वर पाणा ।।

(४०)

राग हमीर

कोऊ कछू कहै मन लागा ।।टेक।।
ऐसी प्रीत लगी मनमोहन ज्यूं सोना में सोहागा ।
जनम जनम का सोया मनुवाँ सतगुर सब्द सुण जागा ।
मात पि[illegible] सुतां [illegible]बीला, टूट गयो ज्यूं तागा ।
मीरा [illegible]भु गिर[illegible]नागर भाग हमारा जागा ।।

ization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(४१)

रा धानी

मैं गिरधर रंग राती, सैयाँ मैं० ।।टेक।।

पचरंग चोला पहर सखी मैं, झिरमिट खेलन जाती ।
ओह झिरमिट माँ मिल्यो साँवरो, खोल मिली तनगाती ।
जिनका पिया परदेस बसत है, लिख लिख भेजे पाती ।
मेरा पिया मेरे हीय बसत है, ना कहुँ आती जाती ।
चंदा जायगा सूरज आयगा, जायगो धरणि अकासी ।
पवन पाणी दोनुं ही जायंगे, अटल रहे अविनासी ।।

(४२)

धुन लखनी

तुमरे कारण सब सुख छोड़्या, अब मोंहि क्यूं तरसावौ हो ।
बिरह बिथा लागी उर अंतर, सो तुम [illegible] बुझावौ हो ।
अब छोड़त नहिं बणै प्रभू जी, हं[illegible]वौ हो ।
मीरा दासी जनम जनम की, [illegible] से अंग लगावौ हो ।।

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

राग पीलू

तेरो कोई नहिं रोकण हार, मगन होइ मीरा चली ॥टेक॥

लाज सरम कुल की मरजादा सिर से दूर करी ।
मान अपमान दोउ धर पटके निकसी हूँ ज्ञान गली ।
ऊँची अटरिया लाज किवड़िया, निरगुण सेज बिछी ।
पचरंगी झालर सुभ सोहै, फूलन फूल कली ।
बाजबंद कंडूला सोहै, सिन्दुर माँग भरी ।
सुमिरन थाल हाथ में लीन्हा, सोभा अधक खरी ।
सेज सुखमणा मीरा सोहै, सुभ है आज घरी ।
तुम जाओ [illegible] अपणो, मेरी तेरी नाहिं सरी ॥

ization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

राग प्रभाती

राम मिलण रो घड़ी उमावो,
नित उठ जोऊँ बाटरियां ॥टेक॥
दरस बिना मोंहि कछू न सुहावें, जक न पड़त है आँखड़ियां।
तलफत तलफत बहु दिन बीता, पड़ी बिरह की पाथड़ियां।
अब तो वेगि दया करि साहिब, मैं तो तुम्हारी दासड़ियाँ।
नैण दुखी दरसण कूं तरसै, नाभि न बैठे साँसड़ियाँ।
राति दिवस यह आरति मेरे, कब हरि राखै पासड़ियाँ।
लगी लगन छूटण की नाहीं, अब क्यूं कीजै आँटड़ियाँ।
मीरा के प्रभु कबर मिलोगे, पूरौ मन की आसड़ियाँ।

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

राग कमोद

आली रे मेरे नैणां बाण पड़ी ॥टेक॥
चित्त चढ़ी मेरे माधुरी मूरत, उर बिच आन अड़ी ।
कब की ठाढ़ी पंथ निहारूँ, अपने भवन खड़ी ।
कैसे प्राण पिया बिनि राखूं, जीवन मूर जड़ी ।
मीरा गिरधर हाथ बिकानी, लोग कहैं बिगड़ीं ॥

(४६)

राग कान्हरा

तनक हरि चितवौजी मोरी ओर ॥टेक॥
हम चितवत तुम चितवत नाहीं, दिल के बड़े कठोर ।
मेरे आसा चितवनि तुमरी और न दूजी दोर ।
तुमसे हमकूं कबर मिलोगे, हमसी लाख करोर ।
ऊभी ठाढ़ी अरज क[illegible] हूँ, अरज करत भयो भोर ।
मीरा के प्रभु हरि आ[illegible]ासी, देस्यू प्राण अकोर ॥

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

राग प्रभावती

म्हारो जनम मरन को साथी,
थाँने नहिं बिसरुं दिन राती ॥टेक॥
तुम देख्याँ बिन कल न पड़त हूं, जानत मेरी छाती ।
ऊँची चढ़ चढ़ पंथ निहारूँ, रोये अंखियाँ राती ।
यो संसार सकल जग झूठो, झूँठा कुलरा न्याती ।
दोउ कर जोड्या अरज करत हूं, सुण लीज्यो मेरी बाती ।
यो मन मेरो बड़ो हरामी, ज्यों मदमाती हाथी ।
सतगुरु दस्त धर्यो सिर ऊपर, आँकुस दे समझाती ।
पल पल तेरा रूप निहारूँ, निरख निरख सुख पाती ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणाँ चित राती ॥

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(४८)

राग सोरठ

जावा दे री जावा दे, जोगी किसका मीत ।।टेक ।।
सदा उदास रहै मोरी सजनी, निपट अटपटी रीत ।
बोलत बचन मधुर से मानूं, जोरत नाहीं प्रीत ।
मैं जाणूं या पार निभैगी, छांड़ि चले अधबीच ।
मीरा के प्रभु स्याम मनोहर, प्रेम पियारा मीत ।।

(४९)

राग सारंग

आली म्हाँने लागे बृन्दाबन नीको ।।टेक।।
घर घर तुलसी ठाकुर पूजा, दरसण गोबिन्द जी को ।
निरमल नीर बहत जमना में, भोजन दूध दही को ।
रतन सिंघासन आप बिराजे, मुकुट धर्‌यो तुलसी को ।
कुंजन कुंजन फिरत राधिका, सबद सुणत मुरली को ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, भजन बिना नर फीको ।।

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(५०)

राग धनाश्री

मेरो मन रामहि राम रटै रे ॥टेक॥

राम नाम जप लीजे प्राणी, कोटिक पाप करै रे ।
जनम जनम के खतजु पुराने, नामहि लेत फटै रे ।
कनक कटोरे अम्रत भरियो, पीवत कौन नटै रे ।
मीरा कह प्रभु हरि अबिनासी, तन मन ताहि पटै रे ॥

(५१)

भरोसे अपने राम को ॥टेक॥

और नहीं कछु काम के ॥ भरोसे.....
जो कछु माँगूं सो देन गुसइयाँ, वारी जाऊँ ऐसे नाम को ॥

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

तुमको छोड़ स्वामी कहँ जाऊँ ?

किसके आगे शीश नवाऊँ किसके आगे हाथ पसारूँ ?
ऐसो को समरथ जग माहीं, जाके दिये अघाऊँ ?
दीनबन्धु प्रभु तुम्हरे दरस से, मोक्ष धाम पद पाऊँ ॥

(५३)

दो में एकौ तौ न भई ।

ना हरि भजे न गृह सुख पाये, वृथा विहाय गई ।
ठानी हुती और कछु मन में, औरै आनि ठई ।
अविगतगति कछु समुझि परतिनहिं, जो कछु करत दई ॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

अरे मन धीरज काहे न धरैं।

सुभ अरु असुभ करम पूरबले, रती घटै न बढ़ै।
होनहार होवै पुनि सोई, चिन्ता काहे करै।
पसु पंछी जिव कीट पतंगा, सब की सुद्ध करै।
गर्भ बास में खबर लेतु है, बाहर क्यों बिसरै।
मात पिता सुत संपति दारा, मोह के ज्वाल जरै।
मन तू हंसन से साहिब के, भटकत काहे फिरै।
सतगुरु छोड़ और को ध्यावै, कारज इक न सरै।
साधुन सेवा कर मन मेरे, कोटिन व्याधि हरै।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सहज में जीव तरै॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

जा दिन मन पंछी उड़ि जैहैं ॥टेक॥

ता दिन तेरे तन तरवर के, सबै पात झरि जैहैं ॥
या देही को गर्व न कीजै, स्यार काग गिध खैहैं ॥
तन गति तीन बिष्ट किर्म ह्वै, नातर खाक उड़ैहैं ॥
कहँ वह नैन कहाँ वह सोभा, कहँ वह रूप दिखैहैं ॥
जिन लोगन तें नेह करतु है, तेई देखि घिनैहैं ॥
घर के कहत सवेरे काढ़ो, भूत होय धरि खैहैं ॥
जिन पूतन को बहु प्रतिपाल्यो, देवी देव मनहैं ॥
तेई लै बाँस दियो खोपरी में, सीस फेरि बिखरैहैं ॥
अजहूँ मूढ़ करै सतसंगत, संतन में कछु पैहैं ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, आवागमन नसैहैं ॥

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(५६)

भजन बिन योंही जनम गँवायो ।।टेक।।

गर्भ बास में कौल कियो थो, तब तोहि बाहर लायो ।।
जठर अगिन ते काढ़ि निकारो, गाँठि बाँधि क्या लायो ।।
बह बह मुवो बैल की नाईं, सोइ रह्यो उठ खायो ।।
कहं कबीर सुनो भाई साधो, चौंरासी भरमायो ।।

(५७)

भीजै चुनरिया प्रेम रस बूंदन ।

आरत साज के चली है सुहागिन, पिय अपने को ढूंढ़न ।
काहे की तोरी बनी है चुनरिया, काहे के लगे चारो फूंदन ।।
पाँच तत्त की बनी है चुनरिया, नाम के लागे फूंदन ।
चढ़िगे महल खुल गई रे किबरिया दास कबीर लागे झूलन ।

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

तलफै बिन बालम मोरा जिया ॥टेक॥

दिन नहिं चैन रैन नहि निंदिया ।
तलफ तलफ के भोर किया ॥
तन मन मोर रहट अस डोलै ।
सूनी सेज पर जनम छिया ॥
नैन थकित भये पन्थ न सूझै ।
साइँ बेदरदी सुधि न लिया ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो ।
हरो पीर दुख जोर किया ॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(५९)

मोरी रंगी चुनरिया, धो धुबिया ॥
जनम जनम के दाग चुनर के,
सतसंग जल से छुड़ा धोबिया ॥
सतगुरु ज्ञान मिले फल चारी,
सबद कै कलप चढ़ा धुबिया ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो,
गुरु के चरन चित ला धुबिया ॥

(६०)

बीती बहुत रहि थोरी सी ॥टेक॥
खाट पड़े नर झींखन लागे, निकसि प्रान गयो चोरी सी ॥
भाई बंद कुटुंब सब आये, फूंक टियो मानो होरी सी ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सिर पर देत हैं भौंरी सी ॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

मन न रंगाये रंगाये जोगी कपड़ा ॥टेक॥

आसन मारि मन्दिर में बैठे ।
नाम छाड़ि पूजन लागे पथरा ॥
कनवाँ फड़ाय जोगी जटवा बढ़ौले ।
दाढ़ी बढ़ाय जोगी होइ गैले बकरा ॥
जंगल जाइ जोगी धुनिया रमौले ।
काम जराय जोगी होइ गैले हिजरा ॥
मथवा मुड़ाय जोगी कपरा रँगौले ।
गीता बाँचिके होइगैले लबरा ॥
कहहि कबीर सुनो भाई साधो ।
जम दरवजवाँ बाँधल जैबे पकरा ॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(६२)

राग आसावरी–तीन ताल

कर ले सिंगार चतुर अलबेली,
साजन के घर जाना होगा ॥
माटी ओढ़ावन, माटी बिछावन,
माटी से मिल जाना होगा ॥
नहा ले, धो ले, सीस गुंथा ले,
फिर वहाँ से नहिं आना होगा ॥
(कबीर)

(६३)

हमकाँ ओढ़ावै, चदरिया, चलती बिरिया ॥
प्रान राम जब निकसन लागे, उलट गई दोउ नैन पुतरिया ।
भीतर से जब बाहर लाये, छूट गई सब महल अटरिया ।
चार जने मिलि खाट उठाइन, रोवतलै चले डगर डगरिया ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, संग चली वह सूखी लकरिया ।

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(६४)

रमैया की दुलहिन लूटा बजार ॥

सुरपुर लूटा, नागपुर लूटट तीन लोक मची हाहाकार ॥
ब्रह्मा लूटे महादेव लूटे, नारद मुनि के परी पिछार ॥
स्त्रिगी की भिगी करि डारी, पारासर के उदर बिकार ॥
कनफूंका चिदकाशी लूटे, लूटे जोगेसुर करत बिचार ॥
हमतो बचिगे साहब दयासे, सब्द डोर गहि उतरे पार ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, या ठगिनी से रही हुसियार।

(६५)

मोकों कहाँ ढूंढ़ता बन्दे, मैं तो तेरे पास में ।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में ।
ना तो कौन क्रिया कर्म में, नहीं योग बैराग में ।
खोजी होय तो तुरत मिलिहौं, पल भर की तालास में ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सब स्वासों की स्वाँस में ॥

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

कैसे दिन कटिहैं जतन बताये जइयौ ॥
एहि पार गंगा ओहि पार जमुना ।
बिचवा मड़इया हमका छवाये जइयौ ॥
अँचरा फारि के कागज बनाइन ।
अपनी सुरतिया हियरे लिखाये जइयौ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो ।
बहियाँ पकरि के रहिया बताये जइयौ ॥

(६७)

साधो, सो सतगुरू मोंहि भावै ।
सत्त प्रेम का भर भर प्याला, आप पिवै मोंहि प्यावै ।
परदा दूर करै आँखिन का, ब्रह्म दरस दिखलावै ॥
जिस दरस मूं सब लोक दरसै, अनहद सब्द सुनावै ॥
कहै कबीर ताको भय नाहीं, निर्भय पद परसावै ॥

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(६८)

सार गहनी

मन मस्त हुआ तब क्यों बोलै ।।टेक।।

हीरा पायो गाँठ गठियायो, बार बार वाको क्यों खोलै ।
हलकी थी जब चढ़ी तराजू, पूरी भई तब क्यों तोलै ।
सुरत कलारी भइ मतवारी, मदवा पी गई बिन तोले ।
हंसा पाये मान सरोवर, ताल तलैया क्यों डोलै ।
तेरा साहिब है घट माहीं, बाहर नैना क्यों खोलै ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, साहिब मिल गये तिल ओलै ।।

(६९)

साईं बिन दरद करेजे होय ।
दिन नाहि चन रात नहि निंदिया, कासे कहूँ दुख रोय ?
आधी रतियाँ पिछले पहिरवा, साईं बिना तरस रही सोय ।
कहत कबीर सुनो भाई प्यारे, साईं मिले सुख होय ।।

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

करम गति टारे नाँहि टरी ।।टेक।।

मुनि बसिष्ट से पंडित ज्ञानी, सोधि के लगन धरी ।।
सीता हरन मरन दसरथ को, वन में बिपति परी ।।
कहँ वह फंद कहाँ वह पारिधि, कहँ वह मिरग चरी ।।
सीता को हरि ले गयो रावन, सोने के लंक जरी ।।
नीच हाथ हरिचंद बिकाने, बलि पाताल धरी ।।
कोटि गाय नित पुन्न करत नृग, गिरगिट जोनि परी ।।
पाण्डव जिनके आपु सारथी, तिन पर बिपति परी ।।
दुरजोधन को गरब घटायो, जदुकुल नास करी ।।
राहु केतु औ भानु चन्द्रमा, विधि संजोग परी ।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, होने ह्वै के रही ।।

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

राग आसावरी – दीपचंदी

मन ! तोहि केहि बिधि कर समझाऊँ ।।

सोना होय तो सुहाग मँगाऊँ, बंक नाल रस लाऊँ ।
ज्ञान शब्द की फूंक चलाऊँ, पानी कर पिघलाऊँ ।।
घोड़ा होय तो लगाम लगाऊँ, ऊपर जीन कसाऊँ ।।
ह्वै सवार तेरे पर बैठूं, चाबुक दै के चलाऊँ ।।
हाथी होय तो जंजीर गढ़ाऊँ, चारो पैर बधाऊँ ।।
होय महावत तेरे पै बैठूं, अंकुश लैके चलाऊँ ।।
लोहा होय तो ओरण मँगाऊँ, ऊपर धुवन धुवाऊँ ।।
घवन की घनघोर मचाऊँ, जंतर तार खिचाऊँ ।।
ज्ञानी होय तो ज्ञान सिखाऊँ, सत्य की राह चलाऊँ ।।
कहत कबीर सुनो भइ साधो, अमर पुरी पहुँचाऊँ ।।

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

(७२)

घूंघट का पट खोल रे ! तोको पीव मिलेंगे ।
घट घट में वह साईं रमता, कटुक बचन मत बोल रे ।
धन जोबन को गरव न कीजै, झूठा पचरंग चोल रे ।
सुन्न महल में दियना बारिले, आसन सों मत डोल रे ।
जाग जुगुत सो रंग महल में, पिय पायो अनमोल रे ।
कहै कबीर आनंद भयो है, बाजत अनहद ढोल रे ।।

(७३)

होली

ये अखियाँ अलसानी हो, पिय की सेज चलो ।।टेक।।
खंभ पकरि पतंग अस डोलै, बोलै मधुरी बानी ।
फूलन सेज बिछाय जो राख्यो, पिया बिना कुम्हिलानी ।
धीरे पाँव धरौ पलँगा पर, जागत ननद जिठानी ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, लोकलाज बिलछानी ।।

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

रहना नहिं देस बिराना है।

यह संसार कागद की पुड़िया, बूंद पड़े धुल जाना है।
यह संसार काँट की वाड़ी, उलझ पुलझ मर जाना है ॥
यह संसार झाड़ औ झांखड़, आग लगे बरि जाना है।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु नाम ठिकाना है ॥

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

साधो ब्रह्म अलख लखाया, जब आप आप दरसाया ।
बीज मद्ध ज्यों बृच्छा दरसै, बृच्छा मद्धे छाया ।
ज्यों नभ मद्धे सुन्न देखिये, सुन्न अनन्त आकारा ।
निः अच्छर ते अच्छर जैसे, अच्छर छर बिस्तारा ।
ज्यों रवि मद्धे किरन देखिये, किरन मद्ध परकासा ।
परमातम में जीव ब्रह्म इमि, जीव मद्ध तिमि स्वाँसा ।
स्वाँसा मद्धे सब्द देखिये, अर्थ सब्द के माहीं ।
ब्रह्म ते जीव जीव ते मन यों, न्यारा मिला सदा ही ।
आपहिं बृच्छ बीज अंकूरा, आप फल फल छाया ।
अनन्ताकार सुन्न नभ आपै, स्वांस शब्द अरथाया ।
निः अच्छर अच्छर छर आपै, मन जीव ब्रह्म समाया ।
आतम में परमातम दरसै, परमातम में झांईं ।
झांईं में परछांईं दरसै, लखै कबीरा सांईं ॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

बहुरि नहिं आवना यह देस।

जो जो गये बहुरि नहिं आये, पठवत नाहिं संदेस।
सुर नर मुनि और पीर औलिया, देवी देव गनेस।
धरि धरि जनम सबै भरमे हैं, ब्रह्मा, विस्नु महेस।
जोगी जंगम और सन्यासी, दीगम्बर दरबेस।
चुंडित मुंडित पंडित लोई, सुरग रसातल सेस।
ज्ञानी गुनी चतुर औ कबिना, राजा रंक नरेस।
कोई रहीम कोई राम बखाने, कोई कहै आदेस।
नाना भष बनाय सबै, मिलि ढूंढ़ फिरे चहुँ देस।
कहै कबीर अंत ना पैहौ, बिन सतगुरु उपदेस॥

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

(७७)

माया महाँ ठगिनी, अब हम जानी।
तिरथुन फांस लिये कर डोलै, बोलै मधुरी बानी।
केसव के कमला होइ बैठी, सिवके भवन भवानी।
पंडा के मूरत होइ बैठी, तीरथहू में पानी।
जोगी के जोगिन होइ बैठी, राजा के घर रानी।
काहू के हीरा होइ बैठी, काहू के कौड़ी कानी।
भक्तन के भक्तिन होइ बैठी, ब्रह्मा के ब्रह्मानी।
कहँ कबीर सुनो भाई साधो, यह सब अकथ कहानी॥

(७८)

मोरी चुनरी में परि गयो दाग पिया।
पाँच तत्त की बनी चुनरिया, सोरह सै बंद लागे जिया।
यह चुनरी मोरे मैंके ते आई, ससुरे में मनुवाँ खोय दिया।
मलि मलि धोई दाग न छटे ज्ञान को साबुन लाय पिया।
कहँ कबीर दाग कब छुटिहैं, जब साहब अपनाय लिया॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

दुलहिन अँगिया काहे न धोवाई।
बालपने की मैली अँगिया, विषय दाग परि जाई।
बिन धोये पिय रीझत नाहीं, सेज सें देत गिराई।
सुमिरन ध्यान के साबुन करि ले, सत्तनाम दरियाई।
दुबिधा के भेद खोल बहुरिया, मन कै मैल धोवाई।
चेत करो तीनों पन बीते, अब तो गवन नगिचाई।
पालनहार द्वार हैं ठाढ़े, अब काहे पछिताई।
कहत कबीर सुनो री बहुरिया, चित अंजन दे आई।

(८०)

अँधियरवा में ठाढ़ि गोरी का करलू ।।टेक।।
जब लगि तेल दिया में बाती, येहि अँजोरवा बिछाय घलतू।
मन का पलंग संतोष बिछौना, ज्ञान के तकिया लगाय रखतू।
जरि गया तेल बुझाय गइ बाती, सुरत में सुरत समाय रखतू।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जोतिया में जोतिया मिलाय रखतू।।

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US
झिन झिन, झिन झिन, बिनी चदरिया।
काहे कै ताना, काहे कै भरनी, कौन तार से बिनी चदरिया।
इंगला पिंगला ताना भरनी, सुषमन तार से बिनी चदरिया।
आठ कँवलदल चरखा डोलै, पाँच तत्त गुन तीनी चदरिया।
साँई को सीयत मास दस लागै, ठोक ठोक के बिनी चदरिया।
सो चादर सुन नर मुनि ओढ़ी, ओढ़ि के मैली कीन्हीं चदरिया।
दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धरि दीन्हीं चदरिया॥

(८२)

मन लागो मेरो यार फकीरी में ॥टेक॥
जो सुख पावो नाम भजन में, सो सुख नाहिं अमीरी में।
भला बुरा सब को सुनि लीजै, कर गुजरान गरीबी में।
प्रेम नगर में रहनि हमारी, भलि बनि आई सबूरी में।
हाथ में कूंडी, बगल में सोंटा, चारों दिसि जागीरी में।
आखिर यह तन खाक मिलैगा, कहा फिरत मगरूरी में।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, साहिब मिलै सबूरी में॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

साधो सहज समाधि भली ।

गुरु प्रताप जा दिन से जागी, दिन दिन अधिक चली ।
जहँ जहँ डोलौं सो परिकरमा, जो कछु करौं सो सेवा ।
जब सोवौं तब करौं दंडवत, पूजौं और न देवा ।
कहौं तो नाम सुनौं सो सुमिरन, खावँ पियौं सो पूजा ।
गिरह उजाड़ एक सम लेखौं, भाव मिटावौं दूजा ।
आँख न मूदौं कान न रूधौं, तनिक कष्ट नहिं धारौं ।
खुले नैन पहिचानौं हँसि हँसि, सुन्दर रूप निहारौं ।
सबद निरन्तर से मन लागा, मलिन बासना त्यागी ।
ऊठत बैठत कबहुँ न छूटै, ऐसी तारी लागी ।
कह कबीर यह उनमुन रहनी, सो परगट करि गाई ।
दुख सुख से कोइ परे परम पद, तेहि पद रहा समाई ।।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

होली

आई गवनवाँ की सारी, उमिरि अबहीं मोरी बारी ।।टेक।।
साज समाज पिया लै आये, और कहरिया चारी ।
बम्हना बेदरदी अचरा पकरि कै, जोरत गँठिया हमारी ।
सखी सब पारत गारी ।।

विधि गति वाम कछु समझ परत ना, बैरी भई महतारी ।
रोय रोय अँखियाँ मोर पोछत, घरवा से देत निकारी ।
भई सब को हम भारी ।।

गवन कराय पिया लै चाले, इत उत बाट निहारी ।
छूटत गाँव नगर से नाता, छूटै महल अटारी ।
करम गति टरै न टारी ।।

नदिया किनारे बलम मोर रसिया, दीन्ह घुंघट पट टारी ।
थरथराय तन काँपन लागे, काहू न देख हमारी ।
पिया लै आये गोहारी ।।

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

कहै कबीर सुनो भाई साधो, यह पद लेहु बिचारी।
अब के गौना बहुरि नहिं औना, करि ले भेंट अँकवारी।
एकबेर मिलिले प्यारी ॥

(८५)

रस गगन गुफा में अजर झरै।
बिन बाजा झनकार उठै, जहँ समुझि परै जब ध्यान धरै।
बिना ताल जहँ कमल फुलाने, तेहि चढ़ि हंसा केलि करै ॥
बिन चंदा जियारी दरसै, तहँ तहँ हंसा नजर परै।
दसवें द्वारे ताली लागी, अलख पुलख जाको ध्यान धरै।
काल कराल निकट नहिं आवै, काम क्रोध मद लोभ जरै।
जुगन जुगन की तृषा बुझाती, करमभरम अघव्याधि टरै।
जुगन जुगन की तृषा बुझाती, करम भरम अघ व्याधि टरै।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, अमर होय, कबहूँ न मरै ॥

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

(८६)

तेरी गठरी में लागे चोर, बटोहिया, का रे सोवे ।
पाँच पचीस तीन हैं चोरवा, यह सब कीन्हा सोर ।
जाग सवेरा, बाट अनेरा, फिर नहिं लागे जोर ।
भव सागर इक नदी वहत है, बिन उतरे जीव बोर ।
कहैं कबीर, सुनो भाई साधो, जागत कीजै भोर ॥

(८७)

साधो मन का मान तियागो ॥
काम क्रोध संगत दुर्जन की, ता तें अहि निसि भागो ।
सुख दुख दोनों सम करि जानै, और मान अपमाना ।
हर्ष सोक तें रहै अतीता, तिन जग तत्व पिछाना ।
अस्तुति निंदा दोऊ त्यागे, खोजै पद निरबाना ।
जन नानक यह खल कठिन है, किनहूँ गुरमुख जाना ॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(८८)

मन की मनहीं माँहि रही।

ना हरि भजे, न तीरथ सेवे, चोटी काल गही।
दारा मीत पूत रथ संपति, धन जन पूर्न मही।
और सकल मिथ्या यह जानो, भजन राम सही।
फिरत फिरत बहुते जुग हास्यो, मानस देह लही।
नानक कहत मिलन की बिरिया, सुमिरत कहा नही॥

(८९)

काहे रे बन खोजन जाई!

सर्ब निवासी सदा अलेपा, तोही संग समाई।
पुष्प मध्य ज्यों बास बसत है, मुकर माँहि जस छाई।
तैसेही हरि बसै निरंतर, घट ही खोजो भाई।
बाहर भीतर एकै जानो, यह गुरु ज्ञान बताई।
जन नानक बिन आपा चीन्हें, मिटै न भ्रम की काई॥

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

जो नर दुख में दुख नहिं मानै।
सुख सनेह अरु भय नहिं जाके, कंचन माटी जानै।
नहिं निन्दा नहिं अस्तुति जाके, लोभ मोह अभिमाना।
हर्ष सोक तें रहै नियारो, नाहि मान अपमाना।
आसा मनसा सकल त्यागि कै, जग तें रहै निरासा।
काम क्रोध जेहिं परसै नाहिन, तेहिं घट ब्रह्म निवासा।
गुरुकिरपा जेहिं नरपैकीन्ही, तिन यहजुगति पिछानी।
नानक लीन भयो गोबिंद सों, ज्यों पानी संग पानी ॥

———

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

सब कछु जीवत को व्यौहार ।

मात पिता भाई सुत बाँधव, अरु पुनि गृह की नार ।
तन तें प्रान होत जब न्यारे, टेरत प्रेत पुकार ।
आध घरी कोऊ नहिं राखै, घर तें देत निकार ।
मृग-तृस्ना ज्यों जग रचना यह, देखो हृदे विचार ।
कहु नानक भजु राम नाम नित जा तें होत उधार ।।

(१२)

अब मैं कौन उपाय करूँ ।।टेक।।

जेहि बिधि मन को संसय छुटै, भव-निधि पार परूँ ।
जनम पाय कछु भलो न कीन्हो, ता तें अधिक डरूँ ।
गुरु मत सुन कछु ज्ञान न उपज्यो, पसुवत उदर भरूँ ।।
कहु नानक प्रभु बिरद पिछानो, तब हौं पतित तरूँ ।।

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

जा में भजन राम को नाहीं ।

तेहि नर जनम अकारथ खोयो, यह राखो मन माहीं ।
तीरथ करै वर्त पुनि राखै, नहि मनुवा बस जा को ।
निफल धर्म ताहि तुम्ह मानो, साँच कहत मैं या को ।
जैसे पाहन जल में राख्यो, भेदै नहिं तेहि पानी ।
तैसे ही तुम ताहि पिछानो, भगतिहीन जो प्रानी ।
कलि में मुक्ति नाम तें पावत, गुरु यह भेद बतावै ।
कहु नानक सोई नर गरुवा, जो प्रभु के गुन गावै ॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(९४)

यह मन नेक न कह्यो करै।
सीख सिखाय रह्यो अपनी सी, दुरमति तें न टरै।
मद माया बस भयो बावरो, हरि जस नहिं उचरै।
करि परपंच जगत के डहकै, अपनो उदर भरै।
स्वान पूंछ ज्यों होय न सूधो, कह्यो न कान धरै।
कहु नानक भजु रामनाम नित, जा तें काज सरै॥

(९५)

राग दुर्गा-ताल तेवरा

रे मन! राम सों कर प्रीत ॥टेक॥
श्रवण गोबिन्दगुण सुनो अरु गाउ रसना गीत।
कर साधु-संगत सुमिरि माधो होय पतित पुनीत।
काल व्याल ज्यों परचो डोलै मुख पसारे मीत।
आजकल पुनि तोहि ग्रसिहै समझ राखो चीत।
कहे नानक राम भज ले जात अवसर बीत॥

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

राम सुमिर राम सुमिर एही तेरो काज है ।।टेक।।
माया को संग त्याग, हरि जू की सरन लाग ।
जगत सुख मान मिथ्या, झूठो सब साज है ।।
सुपने ज्यों धन पिछान, काहे पर करत मान ।
बारू की भीत तसे, बसुधा को राज है ।।
नानक जन कहत बात, बिनसि जैहै तेरो गात ।
छिन छिन करि गयो काल्ह, तसे जात आज है ।।

(९७)

जगत में झूठी देखी प्रीति ।
अपने ही सुख सों सब सब लाग, क्या दारा क्या मीत ।
मेरो मेरो सभी कहत हैं, हित सो बाँध्यो चीत ।
अंतकाल सगी नहिं कोऊ, यह अचरज की रीत ।
मन रख अजहूँ नहिं समुझत, सिख दे हारचो नीत ।
नानक भव जल पार परै, जो गावे प्रभु के गीत ।।

———

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

जाके प्रिय न राम बैंदेही ।
सो छांड़िये कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही ।
तज्यो पिता प्रहलाद, बिभीषन बंधु, भरत महतारी ।
बलि गुरुतज्यो, कंत ब्रजबनितनि, भये मुदमंगलकारी ।
नाते नेह राम के मनियत, सुहृय सुसेव्य जहाँ लौं ।
अंजन कहा आँखि जेहि फूटे बहुतक कहौं कहाँ लौं ।
तुलसी सो सब भांति परम हित, पूज्य प्रान ते प्यारो ।
जासों होय सनेह राम पद, अेतो मतो हमारो ॥

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

मन पछितैहै अवसर बीते।
दुर्लभ देह पाइ हरिपद भजु, करम बचन अरु ही ते।
सहसबाहु दस बदन आदि नृप, बचे न काल बली ते।
हम हम करि धन धाम संवारे, अंत चले उठि रीते।
सुत बनितादि जानि स्वारथ रत, न करु नेह सबही ते।
अंतहु तोहि तजेंगे पामर, तू न तजै अबही ते।
अब नाथहिं अनुराग जागु जड़, त्यागु दुरासा जी ते।
बुझै न काम अगिनि तुलसी कहुँ, विषय भोग बहु घी ते॥

(१००)

अबलौं नसानी, अब न नसैहौं।
राम कृपा भव निसा सिरानी, जागे पुनि न डसैहौं।
पायो नाम चारु चिन्तामनि, उर कर ते न खसैहौं।
स्यामरूप सुचि रुचिर कसौटी, चित कंचनहिं कसैहौं।
परबस जानि हँस्यो इन इन्द्रिन, निज बस ह्वै न हँसैहौं।
मन मधुकर पन कै तुलसी, रघुपति पद कमल बसैहौं॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

ऐसी मूढ़ता या मन की।
परिहरि राम भक्ति सुरसरिता, आस करत ओसवन की।
धूमसमूह निरखि चातक ज्यों, तृषित जानि मति घनकी।
नहिं तहँ सीतलता न वारि, पुनि हानि होत लोचन की।
ज्यों गज काँच विलोकि सेन जड़ छांह आपने तन की।
टूटत अति आतुह अहार बस, छति बिसारि आनन की।
कहँ लौं कहौं कुचाल कृपानिधि, जानत हौ गति जन की।
तुलसिदास प्रभु हरहु दुसह दुख, करहु लाज निज पन की।।

(१०२)

लोचन रहे बैरी होय।
जान-बूझ अकाज कीनों, गये भू में गोय।
अविगत जु तेरी गति न जानी, रह्यो जागत सोय।
सबै छबि की अवधि में है, निकसिगये ढिग होय।
करम हीन में पायो हीरा, दियो पल में खोय।
दास तुलसी राम बिछुरे, कहो कैसी होय।।

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

कबहुंक हों यहि रहनि रहौंगो।

श्री रघुनाथ कृपालु कृपा तें, संत सुभाव गहौंगो।
जथा लाभ संतोष सदा, काहू सों कछु न चहौंगो।
परहित निरत निरंतर मन क्रम, बचन नेम निबहौंगो।
परुषवचन अतिदुसह स्रवनसुनि, तेहि पावकन दहौंगो॥
बिगत मन सम सीतल मन परगुन, नहिं दोष कहौंगो।
परिहरि देह जनित चिन्ता, दुख सुख समबुद्धि सहौंगो।
तुलसिदास प्रभु यहिपथरहि, अविचल हरिभक्तिलहौंगो॥

———

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

केसव, कहि न जाइ का कहिये ।

देखत तव रचना विचित्र अति, समुझि मनहि मन रहिये ।
सून भीति पर चित्र रंग नहिं, तनु बिनु लिखा चितेरे ।
धोये मिटै न मरे भीति दुख, पाइय इहि तन हेरे ।
रवि कर नीर बसै अति दारुन, मकर रूप तेहि नाही ।
बदन हीन सो ग्रसै चराचर, पान करन जे जाहीं ।
कोउ कह सत्य झूठ कह कोऊ, जुगल प्रबल करि मानै ।
तुलसिदास परिहरै तीन भ्रम, सो आपन पहिचानै ।

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

यह बिनती रघुबीर गुसाईं ।

और आस विश्वास भरोसो, हरौ जीव जड़ताई ।
चहौं न सुगति, संपति कछु, रिधि सिधि बिपुल बड़ाई ।
हेतु रहित अनुराग राम पद बढ़ै, अनुदिन अधिकाई ।
कुटिल करम लै जाइ मोहिं, जहँ जहँ अपनी बरियाई ।
तहँ तहँ जनि छिन छोह छाड़िये, कमठ अंड की नाईं ।
या जग में जहँ लगि या तनु की, प्रीति प्रतीति सगाई ।
ते सब तुलसिदास प्रभु हीं सों, होंहि सिमिट इक ठाई ।।

————

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(१०६)

जाऊं कहाँ तजि चरन तुम्हारे ।
काको नाम पतित पावन जग, केहि अति दीन पियारे ।
कौन देव कराइ विरद हित, हठि हठि अधम उधारे ।
खग मृग व्याध पषान विटपजड़, जवन सुवन सुरतारे ।
देव दनुज मुनि नाग मनुज सब, माया विवस बिचारे ।
तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु, कहा अपनपौं हारे ।।

(१०७)

मैं हरि पतित पावन सुने ।
मैं पतित तुम पतित पावन, दोउ बानक बने ।
व्याध गनिका गज अजामिल साखि निगमनि भने ।
और अधम अनेक तारे, जात कापै गने ।
जानि नाम अजानि लीन्हें, नरक जमपुर मने ।
दास तुलसी सरन आयो, राखिये अपने ।।

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

मेरो मन हरिजू हठ न तजै ।

निसिदिन नाथ, देऊं सिख बहु विधि, करत सुभाउ निजै ।
ज्यों जुवती अनुभवति प्रसव अति दारुन दुख उपजै ।
ह्वै अनुकूल बिसारि सूल सठ पुनि खल पतिहिं भजै ।
लोलुप भ्रमत गृह पसु ज्यों जहं तहं सिर पदत्रान बजै ।
तदपि अधम विचरत तेहिं मारग कबहुं न मूढ़ लजै ।
हौं हार्‌यौ करि जतन विविध विधि अतिसै प्रबल अजै ।
तुलसिदास बस होई तबहिं जब प्रेरक प्रभु बरजै ॥

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

सुन मन मूढ़, सिखावन मेरो ॥

हरिपद विमुख लह्यो न काहु सुख, सठ यह समुझि सवेरो।
विछुरे ससि रवि मन नैननि तें, पावत दुख बहुतेरो।
भ्रमत स्रमित निसि दिवस गगन महं, तह रिपु राहु बड़ेरो।
जद्यपि अति पुनीत सुरसरिता, तिहुं पुर सुजस घनेरो।
तजे चरन अजहुं न मिटत नित, बहिबो ताहू केरो।
छुटै न विपति भजे बिनु रघुपति, स्रुति सन्देह निबेरो।
तुलसिदास सब आस छांड़ि करि, होहु राम कर चेरो॥

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

(११७)

माधव, मोह पास क्यों टूटै।

बाहर कोटि उपाय करिय, अभ्यंतर गृंथि न छूटै।
घृत पूरन कराह अंतरगति, ससि प्रतिबिंब दिखावै।
इंधन अनल लगाय कल्पसत, औंटत नास न पावै।
तरु कोटर महँ बस विहंग तरु, काटै मरै न जैसे।
साधन करिय विचार हीन मन, सुद्ध होइ नहिं तैसे।
अंतर मलिन, बिषय मन अति, तन पावन करिय पखारे।
मरइ न उरग अनक जतन, बलमीकि विविध विधि मारे।
तुलसिदास हरि गुरु करुना बिनु, विमल विवेक न होई।
बिनु विवेक संसार घोर निधि, पार न पावै कोई॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

रघुबर, रावरि यहै बड़ाई।
निदरि गनी आदर गरीब पर, करत कृपा अधिकाई।
थके देव साधन करि सब, सपनेंहुँ नहिं देत दिखाई।
केवट कुटिल भालु कपि कौनप, कियो सकल संग भाई।
मिलि मुनि वृन्द फिरत दंडक वन, सो चरचौ न चलाई।
बारहिं बार गीध सबरी की, बरनत प्रीति सुहाई।
स्वान कहें तें कियो पुर बाहिर, जती गयंद चढ़ाई।
तिय निंदक मतिमंद प्रजा, रज निज नय नगर बसाई।
यहि दरबार दीन को आदर, रीति सदा चलि आई।
दीन दयालु, दीन तुलसी की, काहु न सुरति कराई॥

———

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

बैठे हैं राम लखन अरु सीता।
पंचवटी बर परन कुटी तर, कहैं कछु कथा पुनीता।
कपटकुरंगकनकमनि मयलखि, प्रियसोंकहति हँसिहँसिबाला।
पाये पालिबे जोग मंजु मृग, मारेहु मंजुल छाला।
प्रिया बचन सुनि बिहँसि प्रेमबस, गवहिं चाप सर लीन्हें।
चल्यो भाजि फिरि फिरि चितवत, मुनि मख रखवारे चीन्हे।
सोहति मधुर मनोहर मूरति, हेम हरिन के पाछे।
धावनि, नवनि, बिलोकनि, विथकनि, बसै तुलसी उरआछे॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

माधव, मो समान जग माँहीं ।
सब बिधि हीन मलीन दीन अति, लीन विषय कोउ नाहीं ।
तुम सम हेतु रहित कृपालु आरत हित ईस न त्यागी ।
मैं दुख सोक बिकल कृपालु केहि कारन दया न लागी ।
नाहिंन कछु औगुन तुम्हार, अपराध मोर मैं माना ।
ग्यान भवन तनु दियेहु नाथ, सोउ पाय न मैं प्रभु जाना ।
बेनु करील, श्रीखंड बसंतहि दूषन मृषा लगावै ।
सार रहित हतभाग्य सुरभि, पल्लव सो कहु किमि पावै ।
सब प्रकार मैं कठिन, मृदुल हरि, दृढ़ विचार जिय मोरे ।
तुलसिदास प्रभु मोह शृंखला, छुटिहि तुम्हारे छोरे ॥

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

रघुपति भगति करत कठिनाई ।

कहत सुगम, करनी अपार, जानै सोहि जेहि बनि आई ।
जो जेहि कला कुसल ताकहँ सोइ सुलभ सदा सुखकारी ।
सफरी सनमुख जल प्रवाह, सुरसरी बहै गज भारी ।
ज्यों सर्करा मिलै सिकतामहँ, बल तें न कोउ बिलगावैं ।
अति रसग्य सुच्छम पिपीलिका, बिनु प्रयास ही पावै ।
सकल दृश्य निज उदर मेलि सोवै निद्रा तजि जोगी ।
सोइ हरिपद अनुभवै परम सुख, अतिसय द्वैत वियोगी ।
सोक मोह भय हरष दिवस, निसि देस काल तहँ नाहीं ।
तुलसिदास यहि दसाहीन संशय निरमूल न जाहीं ॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

ऐसो को उदार जग माहीं ।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर, राम सरिस कोउ नाहीं ॥
जो गति जोग बिराग जतन करि, नहिं पावत मुनि ज्ञानी ।
सो गति देत गीध सबरी कहँ, प्रभु न बहुत जिय जानी ॥
जो संपति दससीस अरपि करि, रावन सिव पहँ लीन्ही ।
सो संपदा बिभीषन कहँ, अति सकुच सहित हरि दीन्हीं ॥
तुलसिदास सब भांति सकल सुख, जो चाहसि मन मेरो ।
तौ भजु राम, काम सब पूरन, करैं कृपानिधि तेरो ।

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

जानत प्रीति रीति रघुराई।

नाते सब हाते करि राखत, राम सनेह सगाई।
नेह निबाहि देह तजि दसरथ, कीरति अचल चलाई।
ऐसेहुँ पितु तें अधिक गीध पर, ममता गुन गरुआई।
तिय विरही सुग्रीव सखा लखि, प्रान प्रिया बिसराई।
रन परचो बंधु बिभीषन ही को, सोच हृदय अधिकाई।
घर गुरुग्रह प्रिय सदन सासुरे, भई जब जहँ पहुनाई।
तब तहँ कहि सेवरीके फलनिकी रुचि माधुरी न पाई।
सहज सरूप कथा मुनि बरनत, रहत सकुचि सिर नाई।
केवट मीत कहे सुख मानत, बानर बंधु बड़ाई।
प्रेम कनौड़ो राम सों प्रभु त्रिभुवन तिहुँकाल न भाई।
तेरो रिनी कह्यौ हौं कपि सों, ऐसी मानहिं को सेवकाई।
तुलसी राम सनेह सील लखि, जो न भगति उर आई।
तौ तोहिं जनम जाय जननी जड़, तनु तरुनता गँवाई॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(११७)

अजहुँ न निकसै प्राण कठोर ।।टेक।।

दरसन बिना बहुत दिन बीते, सुन्दर प्रीतम मोर ।
चारि पहर चारौं युग बीते, रैनि गँवाई भोर ।
अवधि गई अजहूँ नहिं आये, कतहुँ रहे चितचोर ।
कबहूँ नैन निरखि नहिं देखे, मारग चितवत तोर ।
दादू ऐसे आतुर बिरहणि, जैसे चंद चकोर ।।

(११८)

धनि मोरि आज सुहागिन घड़िया ।।टेक!!

आज मोरे अँगना सन्त चलि आये, कौन करौं मिहमनिया ।
निहुरि निहुरि मैं अँगना बुहारौं, मातो मैं प्रेम लहरिया ।
भाव कै भात प्रेम कै फुलका, ज्ञान की दाल उतरिया ।
दूलनदास के साईं जगजीवन, गुरुके चरन बलिहरिया ।।

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

बाजत नाम नौबति आज।
ह्वै सावधान सुचित्त सीतल, सुनहु गैब्र अवाज।
सुखकंद अनहद नाद सुनि, दुख दुरित क्रम भ्रम भाज।
सतलोक बरसो पानि, धुनि निर्वान यहि मन बाज।
तोइँ चेत चित दै प्रेम मगन, अनंद आरति साज।
घर राम आये जानि, भइनि सनाथ वहुरा राज ॥

(१२०)

अरे मन देहु तजि मतवारि।
जे जे आये जगत महँ इहि, गये ते ते हारि।
नाहि सुमिरयो नाम काँ, सब गयो काम बिगारि।
आपु काँ जिन बड़ा जान्यो, काल खायो मारि।
जानि आपुहिं छोट जग, रहि रहो डोरि सँभारि।
बैठि कै चौंगान निरखहु, रूप छबि अनुहारि।
रहौ थिर सतसंग बासी, देहु सकल बिसारि।
जगजीवन सतगुरु कृपा करि, लेहिं सबै सँवारि ॥

---

(१२१)

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

अब तेरी सरन आयो राम।
जबै सुनिया साध के मुख, पतित-पावन नाम।
यही जान पुकार कीन्ही, अति सतायो काम।
बिषय सेती भयो आजिज, कह मलूक गुलाम॥

(१२२)

अरे मन समुझि करु पहिचान।
को तैं अहसि कहाँ तें आयसि, काहे भर्म भुलान।
सुधि सँभारु बिचार करिकै, बूझु पाछिल ज्ञान।
नात यहि दुइ चार दिन का, अचल नहिं अस्थान।
लोक गढ़ यहु कोट काया, कठिन माया बान।
लाग सब के बचे कोउ नहिं, हर्‌यो सब को ध्यान।
खबरदार बेखबर हो नहिं, ओट नाम निरबान।
जगजीवन सतगुरु राखि लैहैं, चरन रहु लपटान॥

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US
(१२३)

राग विहाग–तीन ताल

नाम जपन क्यों छोड़ दिया ?
क्रोध न छोड़ा, झूठ न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ?
झूठे जग में दिल ललचाकर, असल वतन क्यों छोड़ दिया ?
कौड़ी को तो खूब सम्हाला, लाल रतन क्यों छोड़ दिया ?
जिहि सुमिरनते अतिसुख पावै सो सुमिरन क्यों छोड़दिया ?
खालस इक भगवान भरोसे, तन मन धन क्यों न छोड़दिया ?

(१२४)

राग भैरवी-तीन ताल

मंगल मंदिर खोलो, दयामय ! मंगल मंदिर खोलो ।
जीवनवन अति वेगे वटाव्युं, द्वार ऊभो शिशु भोलो ।
तिमिर गयुं ने ज्योति प्रकाश्यो, शिशु ने उरमाँ लो लो ।
नाम मधुर तम रट्यो निरंतर, शिशु सह प्रेमे बोलो ।
दिव्यतृषातुर आव्यो बालक, प्रेम-अमीरस ढोलो ।।

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

अब हम अमर भये; न मरेंगे।

या कारन मिथ्यात दियो तज, क्योंकर देह धरेंगे।
राग दोष जग बंध करत है, इनको नाश करेंगे।
मर्‍यो अनंत काल तें प्रानी, सो हम काल हरेंगे।
देह बिनाशी, हूँ अविनाशी, अपनी गति पकरेंगे।
नासी नासी हम थिरवासी, चोखे ह्वै निखरेंगे।
मर्‍यो अनंत बार बिन समझ्‍यो, अब सुखदुख बिसरेंगे।
आनन्दघन निपटनिकट अक्षर दो नहिं सुमिरे सो मरेंगे ।।

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

राग आसावरी–द्रुत एक ताल

अन्तर मम विकसित करो अन्तरतर हे,
निर्मल करो, उज्वल करो, सुन्दर करो हे।
जाग्रत करो, उद्यत करो, निर्भय करो हे,
मंगल करो, निरलस, निःसंशय करो हे।
युक्त करो हे सवार संगे, मुक्त करो हे बंध,
संचार करो सकल कर्मे शान्त तोमार छंद।
चरणपद्मे मम चित्त निष्पंदित करो हे,
नंदित करो, नंदित करो, नंदित करो हे॥

(रवीन्द्रनाथ ठाकुर)

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

राग खमाज–धुलाली

वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीड पराई जाणे रे ।
परदुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे ।
सकल लोकमाँ सहुने वंदे, निंदा न करे केनी रे ।
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन धन जननी तेनी रे ।
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, पर स्त्री जेने मात रे ।
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे ।
मोह माया व्यापे नहिं जेने, दृढ़ वैराग्य जेना मनमाँ रे ।
रामनाम शुं ताली लागी, सकल तीरथ तेना तन माँ रे ।
वणलोभी ने कपटरहित छे, काम क्रोध निर्वाया रे ।
भणै नरसैंयो तेनुं दरसन करताँ, कुल एकोतेर तार्यां रें ।।

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

राग कौशिया—तीन ताल

प्रभूजी ! तुम चंदन हम पानी ।
जाकी अंग अंग बास समानी ।
प्रभुजी तुम घनबन हम मोरा ।
जैसे चितवत चंद चकोरा ।
प्रभुजी, तुम दीपक हम वाती ।
जाकी जोति बरै दिन राती ।
प्रभुजी, तुम मोती हम धागा ।
जैसे सोनहि मिलत सुहागा ।
प्रभुजी, तुम स्वामी हम दासा ।
ऐसी भक्ति करै रैदासा ।।

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(१२९)

राग बहार—ताल विलंबित तीन ताल

अब हौं कासो बैर करौं।
कहत पुकारत प्रभु निज मुख तें, "घट घट हौं बिहरौं।"
आपु समान सबै जग लेखौं, भक्तन अधिक डरौं।
श्री हरिदास कृपा ते हरि की, नित निर्भय बिचरौं ॥

(१३०)

संत परम हितकारी !
जग में, संत परम हितकारी।
प्रभुपद प्रगट करावत प्रीती, भरम मिटावत भारी।
परम कृपालु सकल जीवन पर, हरि सम सब दुखहारी।
त्रिगुणातीत फिरत तन त्यागी, रीत जगत ते न्यारी।
ब्रह्मानन्द संतन की सोबत, मिलत है प्रकट मुरारी ॥

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

(१३१)

राग कालिंगड़ा–तीन ताल

प्राणि ! तू हरि सों डर रे, तू क्यों रहा निडर रे।
गाफिल मत रह चेत सबेरा, मन में राख फिकर रे।
जो कुछ करै बेग ही कर ले, सिर पर काल जबर रे।
काले गोरे तन पर भूला, तन जायेगा जर रे।
यम के दूत पकड़ कर घीसें, काढ़ें बहुत कसर रे।
हरिभज हरिभज हरिभज प्राणी, हरि को भजन तू कर रे।
ब्रजकिशोर प्रभुपदनौका चढ़ि भजसागर को तर रे।।

(१३२)

बसुरिया काहे गुमान भरी।
जाति सिफत सब तोरी जानों, मधुबन की लकरी।
जब ते तू हरि के मुख लागी, बाजत बिरह भरी।
सूर श्याम प्रभु अब का करिये, अधरन लागि तरी।।

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(१३३)

डसो री मोंहि श्याम भुजंगम कारे ।
मोहन मुख मुसकान मनहुँ विष, जाति मरे सो मारे ।
फुरै न मंत्र गति नाहीं, चले गुनी गुन डारे ।
प्रेम प्रीत विष हिरदे लागी, डारत हैं तनु जारे ।
निर्विष होत नहिं कैसेहु करि, बहुत गुनी पति हारे ।
सुर श्याम मारुड़ी बिनको, मोसिर गाडू टारे ।।

(१३४)

चरन कमल बंदौं हरि राई ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे कौं सब कछु दरसाई ।
बाहिरौ सुनै गूंग पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराई ।
सूरदास स्वामी करुनामय, बार बार बंदौं तिहि पाई ।।

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

(१३५)

बहुत दिन जीवौ पपीहा प्यारो।
बासर रैन नाँव लै बोलत, भल बिरह ज्वर कारो।
आपु दुखित पर दुखित जानि जिय, चातक नाँव तुम्हारो।
देखो सकल बिचारि सखी जिय, बिछुरन कौ दुख न्यारो।
जाहि लगै सोई पै जानै, प्रेम बान अनियारो।
सूरदास प्रभु स्वाति बूंद लगि, तज्यो सिन्धु करि खारो॥

(१३६)

अविगत गति कछु कहत न आवै।
ज्यों गूंगे मीठे फल कौ रस, अंतरगत ही भावै।
परम स्वाद सबही सु निरंतर, अमित तोष उपजावै।
मन बानी कौ अगम अगोचर, सो जानै जो पावै।
रूप रेख गुन जाति जुगति बिनु, निरालंब कित धावै।
सब बिधि अगम बिचारहिं तातें सूर सगुन पद गावै॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

सरन गये को को न उबारयो ।

जब जब भीर परी संतन कौं, चक्र सुदर्शन तहाँ सँभारयौ ।
भयौ प्रसाद जु अंबरीष कौं, दुर्वासा कौं क्रोध निवारयौ ।
ग्वालन हेत धरयो गोबर्धन, प्रकट इन्द्रको गर्व प्रहारयौ ।
करी कृपा प्रहलाद भक्त पर, खंभ फारि हिरनाकुस मारयौ ।
नरहरिरूप धरयोकरुनाकर, छिनकमाँहिउरनखनिबिदारयो।
ग्राह ग्रसत गज कौं जल बूड़त, नाम लेत वाकौ दुख टारयौ ।
सूर स्याम बिनु और करै कौ, रंगभूमि में कंस पछारयौ ।।

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

जैसे तुम गज कौ पाँव छुड़ायौ ।
अपने जन कों दुखित जानि कै, पाउँ पियादे धायौ ।
जहँ जहँ गाढ़ि परी भक्तन कौं, तहँ तहँ आपु जनायौ ।
भक्ति हेत प्रहलाद उबारयो, द्रौपदि चीर बढ़ायौ ।
प्रीति जानि हरि गये बिदुर कैं नामदेव घर छायौ ।
सूरदास दिज दीन सुदामा, तिहिं दारिद्र नसायौ ॥

(१३९)

रे मन गोविन्द के ह्वै रहियै ।
इहि संसार अपार बिरत ह्वै जम की त्रास न सहियै ।
दुख सुख कीरति भाग आपने, आइ परै सो गहियै ।
सूरदास भगवंत भजन करि अंत वार कछु लहियै ॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

जा दिन मन पंछी उड़ि जैहैं।
ता दिन तेरे तन तरुवर के सबै पात झरि जैहैं।
या देही कौ गरब न करिये स्यार काग गिध खैहैं।
तीननि में तन कृमि कै बिष्टा, कै ह्वै खाक उड़हैं।
कहँ वह नीर कहाँ वह सोभा, कहँ रंग रूप दिखैहैं।
जिन लोगनि सौं नेह करत है, तेई देखि घिनैहैं।
घर के कहत सबारे काढ़ौ, भूत होय धरि खैहैं।
जिन पुत्रनिहिं बहुत प्रतिपाल्यो, देवी देव मनैहैं।
तेई लै खोपरी बाँस दै, सीस फोरि बिखरैहैं।
अजहूँ मूढ़ करौ संतसंगति, संतनि में कछु पैहैं।
नर वपु धारि नाहिं जन हरि कौं, जम की मार सो खैहैं।
सूरदास भगवंत भजन बिनु बृथा सु जनम गवैहैं ॥

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

(१४१)

नहिं अस जनम बार बार।
पुरबलौं धौं पुण्य प्रगट्यौ, लह्यो नर अवतार।
घटै पल पल बढ़े छिन छिन जात लागि न बार।
धरनि पत्ता गिरि परै तें फिरि न लागै डार।
भय उदधि जम लोक दरसै निपट ही अँधियार।
सूर हरि को भजन कर करि उतरि पल्ले पार॥

(१४२)

हमारे निर्धन के धन राम।
चोर न लेत, घटत नहिं कबहूँ, आवत गाढ़े काम।
जल नहिं बूड़त, अगिनि न दाहत, है ऐसो हरि नाम।
वैकुंठनाथ सकल सुखदाता, सूरदास सुख धाम॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

मो सम कौन कुटिल खल कामी।
तुम सों कहाँ छिपी करुनामय, सब के अंतरजामी।
जो तन दियो ताहि बिसरायौ, ऐसो नोन हरामी।
भरि भरि द्रोह बिषै कौं धावत, जैसे सूकर ग्रामी।
सुनि सतसंग होत जिय आलस, बिषयिनि संग बिसरामी।
श्रीहरिचरण छांड़ि बिमुखनिकी निसिदिन करत गुलामी।
पापी परम अधम अपराधी, सब पतितनि में नामी।
सूरदास प्रभु अधम उधारन सुनिये श्रीपति स्वामी॥

(१४४)

मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै।
जैसे उड़ि जहाज कौं पच्छी, फिरि जहाज पर आवै।
कमल नैन कौ छांड़ि महातम, और देव कौं ध्यावै।
परम गंग कौं छाड़ि पियारौ, दुरमति कूप खनावै।
जिहिं मधुकर अंबुज रस चाख्यो, क्यों करील फल भावै।
सूरदास प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै॥

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

(१४५)

अब मैं नाच्यौ बहुत गपाल।
काम क्रोध कौ पहिरि चोलना, कंठ बिषय की माल।
महामोह के नूपुर बाजत, निंदा सब्द रसाल।
भ्रम भोयौ मन भयो पखावज, चलत असंगत चाल।
तृष्ना नाद करति घट भीतर, नाना बिधि दै ताल।
माया को कटि फेंटा बाँध्यौ, लोभ तिलक दियौ भाल।
कोटिक कला काछि दिखराई जल थल सुधि नहिं काल।
सूरदास की सबै अविद्या दूरि करौ नंदलाल॥

(१४६)

हमारी तुमकौ लाज हरी।
जानत हौ प्रभु अंतरजामी, जो मोहिं माँझ परी।
अपने औगुन कहँ लौं बरनौं, पल पल घरी घरी।
अति प्रपंच की मोट बाँधिकै अपने सीस धरी।
खेवनहार न खेवट मेरे, अब मो नाव अरी।
सूरदास प्रभु तव चरननि की आस लागि उबरी॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(१४७)

जैसे राखहु तैसे रहौं।
जानत हौ दुख सुख सब जन के, मुख करि कहा कहौं।
कबहुँक भोजन लहौं कृपानिधि, कबहुँक भख सहौं।
कबहुँक चढ़ौं तुरंग महागज, कबहुँक भार बहौं।
कमल नयन घन स्याम मनोहर अनुचर भयौ रहौं।
सूरदास प्रभु भक्त कृपानिधि, तुम्हरे चरन गहौं॥

(१४८)

राग कान्हरौ

बड़ी है राम नाम की ओट।
सरन गये प्रभु काढ़ि देत नहिं, करत कृपा कै कोट।
बैठत सबै सभा हरि जू की, कौन बड़ो को छोट।
सूरदास पारस के परसे मिटति लोह की खोट॥

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

राग सौरठ

क्यों दासी सुत के पग धारे।

भीषम करन द्रोन मंदिर तजि मम गृह तजे मुरारे।
सुनियत हीन दीन बृषली सुत जाति पाँति तें न्यारे।
तिनक जाइ कियो तुम भोजन जदुकुल लाजनि मारे।
हरिजू कह्यौ सुनौ दुरजोधन, सत्य सुवचन हमारे।
सोइ निरधन सोइ कृपन दीन हैं, जिन मम चरन बिसारे।
तुम साकट वै भगत भागवत, राग द्वेष तें न्यारे।
सूरदास प्रभु नंन नंदन कहैं हम ग्वालनि जुठिहारे॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(१५०)

राग सारंग

अब कछु नाहिन नाथ रह्यौ ।
सकल सभा में पैठि दुसासन अंबर आनि गह्यौ ।
हारि सकल भंडार भूमि आपुन जन बास लह्यौं ।
एकै चीर हुतौ मेरे पर सो इन हरन चह्यौ ।
हा जगदीस राखि इहिं अवसर प्रगट पुकारि करचौ ।
सूरदास उमँगे दोउ नैना, सिंधु प्रवाह बह्यौ ।।

(१५१)

राग मलार

आज जो हरिहिं न सस्त्र गहाऊँ ।
तौ लाजौं गंगा जननी कौं साँतनु सुत न कहाऊँ ।
स्यंदन खंडि महारथि खंडौं कपिध्वज सहित गिराऊँ ।
पाँडव दल सन्मुख ह्वै धाऊँ सरिता रुधिर बहाऊँ ।
इती न करौं सपथ तौ हरि की छत्रिय गतिहिं न पाऊँ ।
सूरदास रनभूमि विजय बिनु जियत न पीठि दिखाऊँ ।।

----

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

राग सारंग

भावी काहू सो न टरै।
कहँ वह राहु कहाँ वे रवि ससि, आनि संजोग परैं।
मुनि बशिष्ठ पंडित अतिज्ञानी, रचिपचि लगनधरै।
तातमरन सियहरन रामबन, बपु धरिबिपति भरै।
रावन जीति कोटि तैतीसों, त्रिभुवन राज करै।
मृत्युहि बाँधि कूप में राखै, भावी बस सो मरै।
अरजुन के हरि हुते सारथी, सोऊ बन निकरै।
द्रुपद सुता को राज सभा, दुस्सासन चीर हरै।
हरीचंद सो को जगदाता, सो घर नीच भरै।
जौ गृह छांड़ि देस बहु धावै, तउ वह संग फिरै।
भावी के बस तीन लोक हैं, सुर नर देह धरै।
सूरदास प्रभु रची सु ह्वैहै, को करि सोच मरै॥

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

राग बिलावल

हम भक्तनि के भक्त हमारे।
सुनि अरजुन परतिज्ञा मेरी, यह ब्रत टरत न टारे।
भक्तनि काज लाज जिय धरि कै, पाइ पियादे धाऊँ।
जहँ जहँ भीर परै भक्तन कौं, तहँ तहँ जाइ छुड़ाऊँ।
जो भक्तनि सों बैर करत है, सो बैरी निज मेरो।
देखि बिचारि भक्त हित कारन, हाँकत हौं रथ तेरो।
जीतें जीति भक्त अपने के, हारें हारि बिचारौं।
सूरदास सुनि भक्त बिरोधी, चक्र सुदर्शन जारौं॥

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

(१५४)

राग मलार

वा पट पीत की फहरानि ।
कर धरि चक्र चरन की धावनि, नहिं बिसरति वह बानि ।
रथ ते उचरि चलनि आतुर ह्वै, कच रज की लपटानि ।
मानौ सिंह सैल तें निकस्यो, महा मत्त गज जानि ।
जिन गोपाल मेरो प्रन राख्यो, मेटि वेद की कानि ।
सोई सूर सहाइ हमारे, निकट भये हैं आनि ॥

(१५५)

राग कंदारौ

जग में जीवत ही को नातौ ।
मन बिछुरे तन छार होइगौ, कोउ न बात पुछातौ ।
मैं मेरी कबहूँ नहिं कीजै, कीजै पंच सुहातौ ।
बिषयासक्त रहत निसि बासर, सुख सियरौ दुख तातौ ।
साँच झूठ करि माया जोरी, आपुन रूखौ खातौ ।
सूरदास कछु थिर न रहैगो, जो आयौ सो जातौ ॥

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

राग धनाश्री

सबै दिन गये बिषय के हेत।
तीनों पन ऐसे ही बीते, केस भये सिर सेत।
आँखिन अंध स्रवन नहिं सुनियत, थाके चरन समेत।
गंगाजल तजि पियत कूपजल, हरि तज पूजत प्रेत।
मन बच क्रम जौ भजै श्याम को, चारि पदारथ देत।
ऐसो प्रभू छांड़ि क्यों भटकै, अजहू चेत अचेत।
राम नाम बिन क्यों छूटैगो, चन्द्र गहै ज्यों केत।
सूरदास कछु खरच न लागत, राम नाम मुख लेत॥

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

(१५७)

राग धनाश्री

अब मैं जानी देह बुढ़ानी।
सीस पाउँ कर कह्यौ न मानत, तन की दसा सिरानी।
आन कहत आनैं कहि आवत, नैंन नाक बहैं पानी।
मिटगइ चमकदमक अंगअंगकी, मति अरुदृष्टि हिरानी।
नाहिं रही कछु सुधि तनमन की, भई जु बात बिरानी।
सूरदास अब होत बिगूचनि भजि लैं सारंगपानी॥

(१५८)

राग धनाश्री

मन तोसौं किती कही समुझाई।
नंद नंदन के चरन कमल भजि तजि पाखंड चतुराई।
सुख संपति दारा सुत हय गय छोंट सबै समुदाई।
छनभंगुर यह सबै स्याम बिनु अंत नाहिं संग जाई।
जनमत मरत बहुत जुग बीते अजहूँ लाज न आई।
सूरदास भगवंत भजन बिनु जैहैं जनम गवाँई॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

राग कल्याण

भक्ति बिनु बैल बिराने ह्वैहौ ।
पाउँ चारि सिर सृंग गुंग मुख, तब कैसे गुन गैहौ ।
चारि पहर दिन चरत फिरत बन तऊ न पेट अघैहौ ।
टेटू कंधारु फूटी नाकनि, कौ लौं धौं भुसखैहौ ।
लादत जोतत लकुट बाजिहै, तब कहँ मूड़ दुरैहौ ।
सीत घाम घन बिपति बहुत बिधि, भार तरैं मरि जैहौ ।
हरि संतनि की कह्यौ न मानत, कियो आपुनौ पैहौ ।
सूरदास भगवंत भजन बिनु, मिथ्या जनम गवैहौ ।।

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

राग सारंग

तजौ मन हरि बिमुखन को संग।
जिनके संग कुमति उपजत है, परत भजन में भंग।
कहा होत पय पान कराये, बिष नहिं तजत भुजंग।
कागहिं कहा कपूर चुगाये, स्वान न्हवाये गंग।
खर को कहा अरगजा लेपन, मरकट भूषण अंग।
गज को कहा सरित अन्हवाये, बहुरि धरै वह ढंग।
पाहन पतित बान नहिं बेधत, रीतौ करत निषंग।
सूरदास कारी कामरि पै, चढ़त न दूजौ रंग॥

———

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(१६१)

राग धनाश्री

रे मन मूरख जनम गँवायौ ।
करि अभिमान बिषयरसगीध्यौ, स्यामसरन नहिं आयौ ।
यह संसार सुवा सेमर ज्यों, सुन्दर देखि लुभायौ ।
चाखन लाग्यौ रुई उड़ि गई, हाथ कछू नहिं आयौ ।
कहा होत अब के पछिताए, पहिले पाप कमायौ ।
कहत सूर भगवंत भजन बिनु, सिर धुन धुनि पछितायौ ।।

(१६२)

राग सारंग

जो सुख होत गुपालहिं गाएँ ।
सो सुख होत न जप-तप कीन्हे, कोटिक तीरथ न्हाएँ ।
दियैं लेत नहिं चारि पदारथ, चरन कमल चित लाएँ ।
तीनि लोक तृन सम करि लेखत, नंद-नंदन उर आएँ ।
बंसीबट, बृन्दाबन जमुना, तजि बैकुंठ न जावै ।
सूरदास हरि कौ सुमिरन करि, बहुरि न भव जल आवै ।।

———

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

(१६३)

गुरु बिनु ऐसी कौन करै ।
माला तिलक मनोहर बाना, लै सिर छत्र धरै ।
भवसागर तैं बूड़त राखै, दीपक हाथ धरै ।
सूर स्याम गुरु ऐसौ समरथ, छिन में लै उधरै ।।

(१६४)

सखी री कौन तिहारे जात ।
राजीवनैन धनुष कर लीन्हें, बदन मनोहर गात ।
लज्जित होंहि पुरवधू पूछैं, अंग अंग मुसकात ।
अति मृदु चरन पंथ बन विहरत, सुनियत अदभुत बात ।
सुन्दर तन सुकुमार दोउ जन, सूर किरिन कुम्हलात ।
देखि मनोहर तीनों मूरति, त्रिविध ताप तन जात ।।

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

मैया मोंहि दाऊ बहुत खिझायो ।
मोसों कहत मोल कौ लीन्हों, तू जसुमति कब जायौ ॥
कहा करौं इहि रिसि के मारे, खेलन हौं नहिं जात ।
पुनि पुनि कहत कौन है माता, को है तेरो तात ॥
गोरे नंद जसोदा गोरी, तू कत स्यामल गात ॥
चटकी दै दै ग्वाल नचावत, हँसत सबै मुसकात ॥
तू मोहीं को मारन सीखी, दाउहिं कबहुँ न खीझै ॥
मोहन मुख रिस की ये बातें, जसुमति सुनि सुनि रीझै ॥
सुनहुँ स्याम बलभद्र चबाई, जनमत ही कौ धूत ॥
सूर स्याम मोंहि गोधन की सौं, हौं माता तू पूत ॥

---

zation by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

जसुमति कान्हहिं यहै सिखावति ।
सुनहु स्याम अब बड़े भये तुम, कहि स्तन पान छुड़ावति ।
ब्रज लरिका तोहिं पीवत देखत, हँसत लाज नहिं आवति ।
जैहैं बिगरि दाँत ये आछे, तातें कहि समुझावति ।
अजहूँ छांड़ि कह्यो करि मेरो, ऐसी बात न भावति ।
सूर स्याम यह सुनि मुस्क्याने, अंचल मुखहि लुकावति ।।

(१६७)

ब्रज घर घर प्रगटी यह बात ।
दधि माखन चोरी करि तै हरि, ग्वाल सखा संग खात ।
ब्रज बनिता यह सुनि मन हरषित, सदन हमारे आवैं ।
माखन खात अचानक पावैं, भुज हरि उरहिं छुवावैं ।
मन ही मन अभिलाष करति सब, हृदय धरति यह ध्यान ।
सूरदास प्रभु कौं घर तें लै, दैहौं माखन खान ।।

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

मया मैं नहिं माखन खायो।

ख्याल परै ये सखा सबै मिलि, मेरे मुख लपटायौ।

देखि तुही सींके पर भाजन, ऊँचे धरि लटकायौ।

हौं जु कहत नान्हे कर अपने, मैं कैसे करि पायौ।

मख दधि पोंछि बद्धि इक कीन्हीं, दोना पीठि दुरायौ।

डारि साँटि मुसुकाइ जसोदा, स्यामहिं कंठ लगायौ।

बाल बिनोद मोद मन मोह्यो, भक्ति प्रताप दिखायौ।

सूरदास जसुमति कौ यह सुख, सिव बिरंचि नहिं पायौ।।

————

zation by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(१६९)

जसोदा ऊखल बाँधे स्याम ।
मन मोहन बाहिर ही छांड़ि, आपु गये गृह काम ।
दह्यौ मथति मुख तै कछु बकरति, गारी दै लै नाम ।
घर घर डोलत माखन चोरत, षटरस मेरे धाम ।
ब्रज के लरकनि मारि भजत हैं, जाहु तुमहु बलराम ।
सूर स्याम ऊखल सौं बांधे निरखहिं ब्रज को बाम ।।

(१७०)

निरखि स्याम हलधर मुसकाने ।
को बाँधै को छोरै इनको, यह महिमा येई पै जाने ।
उतपति प्रलय करत है येई, सेष सहस मुख सुजस बखाने ।
जमलार्जुन तरु तोरि उधारन, कारन करन आपु मन माने ।
असुर संहारन भक्तनि तारन, पावनपतित कहावत बाने ।
सूरदास प्रभु नाम भक्तिके, अतिहित जसुमति हाथ बिकाने ।।

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

जसुमति किहिं यह सीख दई।
सुतहिं बाँधि तू मथति मथानी, ऐसी निठुर भई।
हरैं बोलि जुवतिनि कौं लीन्हौ, तुम सब तरुनि नई।
लरिकिहिं त्रास दिखावत रहियें, कत मुरझाइ गई।
मेरे प्रान जिवन धन माधो, बाँधे बेर भई।
सूर स्याम कौं त्रास दिखावति, तुम कहा कहति दई॥

(१७२)

अब घर काहू के जनि जाहु।
तुम्हरे आज कमी काहे की, कत तुम अनतहिं खाहु।
बरै जेंवरी जिहिं तुम बाँधि, परै हाथ महराई।
नंद मोहिं अतिहीं त्रासत हैं, बाँधे कुँवर कन्हाई।
रोग जाउ मेरे हलधर के, छोरत हो तव स्याम।
सूरदास प्रभु खात फिरहु जनि, माखन दधि तुव घाम॥

---

zation by American Academy of Indic Studies. AAIS(

(१७३)

सुनहु हरि मुरली मधुर बजाई।
मोहे सुर नर नाथ निरंतर, ब्रज बनिता उठि धाई।
जमुना नीर प्रवाह थकित भयो पवन रह्यो मुरझाई।
खग मृग मीन अधीन भये सब अपनी गति बिसराई।
द्रुम बेली अनुराग पुलक तनु सरि थक्यौ निसि न घटाई।
सूर स्याम बृन्दावन बिहरत, चलहु सखी सुधि पाई ।।

(१७४)

आजु बन बेनु बजावत स्याम।
यह कहि कहि चक्रित भईं गोपी, सुनत मधुर सुर ग्राम।
कोउ ज्यौनार करति कोउ बैठी, कोउ ठाढ़ी ही धाम।
कोउ जेंवति कोउ पतिहिं जेंवांवति, कोउ सिंगार में बाम।
मनौ चित्र कैसी लिखि काढ़ीं, सुनत परस्पर नाम।
सूर सुनत मुरली भइ बौरी, मंदन कियो तन ताम ।।

---

(१७५)

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

मुरली मधुर बजाई स्याम।
मन हरि लियौ भवन नहिं भावै, व्याकुल ब्रज की बाम।
भोजन भूषन की सुधि नाहीं, तनु की नहीं सम्हार।
गृह गुरु लाव सूत सों तोरयो, डरीं नहीं व्यवहार।
करत सिंगार विवस भइ सुन्दरि, अंगनि गई भुलाइ।
सूर स्याम बन बेनु बजावत, चित हित रास रमाइ॥

(१७६)

जा दिन तें मुरली कर लीन्ही।
ता दिन तें स्रवनति सुनि सुनि सखि, मन की बात सबै लै दीन्ही
लोक बेद कुल लाज कानि तजि, अरु मरजाद बचन मिति खोनी
तबहीं तें तन सुधि बिसराई, निसि दिन रहति गुपाल अधीनी
सरद सुधा निधि सरद अंस ज्यों, सींचति अमी प्रेम रस भीनी
ता ऊपर सुभ दरस सूर प्रभु, श्री गुपाल लोचन गति छीनी

---

zation by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(१७७)

जोबन दान लेउँगौ तुम सौं।
जाके बल तुम बदति न काहुहिं, कहा दुरावति हमसौं।
ऐसौ घन तुम लिये फिरति हौ, दान देत सतराति।
अतिहिं गर्व तैं कह्यौं न मोसों, नित प्रति आवति जाति।
कंचन कलस महारस भारे, हमहूँ तनक चखावहु।
सूर सुनौ बिन दिये दान के, जान नहीं तुम पावहु॥

(१७८)

अब तौ प्रगट भई जग जानी।
वा मोहन सों प्रीति निरंतर, नाहिं रहैगी छानी॥
कहा करौं सुन्दर मूरति इन, नैननि माँझ समानी।
निकसति नाहिं बहुत पचिहारी, रोम रोम अरुझानी।
अब कैसे निरवारि जाति है, मिली दूध ज्यों पानी।
सूरदास प्रभु अंतरजामी, उर अंतर की जानी॥

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

(१७९)

ऊधो मन माने की बात।
दाख छुहारा छांड़ि अमृत फल विष-कीरा विष खात।
जौ चकोर को दे कपूर कोउ तजि अंगार अघात।
मधुप करत घर कोरि काठ में बँधत कमल के पात।
ज्यों पतंग हित जानि आपनो दीपक सों लपटात।
'सूरदास' जाको मन जासों सोई ताहि सुहात॥

(१८०)

गोपिन की सरि कोऊ नाहीं।
जिन तृन-सम-कुललाज-निगड़ सब तोरचो हरिरस माँही।
जिन निज बस कोने नँदनंदन बिहरीं दै गलबाहीं।
सब संतन के सीस रहौ इन चरन-छत्र की छांहीं॥

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(१८१)

ब्रज की लता-पता मोंहि कीजै।
गोपी पद पंकज पावन की रज जामें सिर भींजै।
आवत जात कुंज की गलियन रूप सुधा नित पीजै।
श्री राधे राधे मुख यह बर मुंहमाँग्यौ हरि दीजै॥

(१८२)

जैए कौन के अब द्वार।
जौ जिय होय प्रीत काहू के दुख सहिये सौ बार।
घर घर राजस तामस बाढ़ो धन जोबन कौं गार।
काम बिबस ह्वै दान देत नीचन को होत उदार।
साधु न बूझत बात न सूझत यह कलि के व्यौहार।
'व्यासदास' कत भाजि उबरिए परिए माँझीधार॥

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

अवधू, जागत नींद न कीजै।

काल न खाइ कल्प नहिं व्यापै, देही जुरा न छीजै।
उलटी गंग समुद्रहि सोखै, ससिहर सूर गरासै।
नवग्रिह मारि रोगिया बठे, जल में व्यंब प्रकासै।
डाल गहमांधे मूल न सूझै, भूल मह्यां फल पावा।
बाँबई उलटि शरप कौं लागी, धरणी महारस खावा।
बैठि गुफा में सब जग देखा, बाहरि कछु न सूझै।
उलटै धनिक पारधी मारचौ यहु अचरज कोइ बूझै॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

जबथैं आतम तत्त बिचारा।

तब निरवैर भया सबहिन थें, क्षेम क्रोध गहि डारा।

व्यापक ब्रह्म सबनि हैं एकै को पंडित को जोगी।

राणा राव कवन सूं कहिये, कवन वैद को रोगी।

इनमें आप आप सबहिन में आप आप सूं खेलै।

नाना भांति पड़े सब भांड़े रूप धरे धरि मेलै।

सोच विचारि सबै जग देखा निरगुण कोइ न बतावै।

कहै कबीर गुणी अरु पंडित, मिलि लीला जस गावै॥

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

ऐसों देखि चरित मन मोह्यो मोर ।
ताथें निस वासरि गुन रमौं तोरि ॥

इक पर्ढ़हि पाठ इक भ्रमैं उदास ।
इक नगन निरन्तर, रहैं निवास ।
इक जोग जुगुति, तन हूँहि खीन ।
ऐंसे राम नाम संग अहे न लीन ।

इक हूँहि दीन, इक देही दान ।
इक करै कलापी, सुरा पान ।
इक तन्त मंत औंषधि वाँन ।
इक सकल सिद्धि राषै अपान ।

इक तीरथ व्रत करि काय जीति ।
ऐंसे राम नाम सूं करै न प्रीति ।
इक ध्योम ध्यूंटि तन होंहि स्याम ।
यूं मुकुति नहीं बिन राम नाम ।

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

सतगुरु तत्त कह्यो बिचारि।
मूल कह्यो अनमैं बिस्तार।
जुरा मरण थे भये धीर।
राम कृपा भई कहि कबीर॥

(१८६)

अरे परदेसी पीव पिछानि।
कहा भयो तोकौं समझि न परई, लागी कैसी वानि।
भोमि बिडारिणी मैं कहा रातौं, कहा कियो कहि मोंहि।
लाहैं कारनि मूल गमावैं, समझावत हूँ तोहि।
निसदिन तोहिं क्यों नींद परत है चितवत नाहीं ताहि।
जम से बैरी सिर पै ठाढ़े पर हथि कहा बिकाय।
झूठे परपंच में कहा लागौं उठ नहिं चालि।
कह कबीर कछु बिलम न कीजै, कौने देखी कालि॥

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

हमन हैं इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या।
रहें आजाद या जग से, हमन दुनिया से यारी क्या।
जो बिछुड़े हैं पियारे से, भटकते दर बदर फिरते।
हमारा यार है हम में, हमन को इन्तजारी क्या।
खलक सब नाम अपने को, बहुत कर सिर पटकता है।
हमन गुरुनाम साँचा है, हमन दुनिया से यारी क्या।
न पल बिछुड़े पिया हम से, न हम बिछुड़े पियारे से।
उन्हीं से नेह लागी है, हमन को बेकरारी क्या।
कबीरा इश्क का माता, दुई को दूर कर दिल से।
जो चलना राह नाजुक है, हमन सिर बोझ भारी क्या॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(१८८)

एक समसेर इकसार बजती रहे,
खेल सूरमा कोई सन्त झेले।
कामदल जीति करि क्रोध पैमाल करि,
परम सुखधाम तहँ सुरति मेले।
सील से नेह करि ज्ञान कौ खंग ले,
आय चौगान में खेल खेले।
कहै कबीर सोई संत सोई सूरमा,
सीस को सौंपि करि करम ठेले॥

(१८९)

मोतिया बरसै रौरे देसवाँ दिन राती।
मुरली शब्द सुनि मन आनन्द भयौ, जोति बरै दिनराती।
बिना मूल के कमल प्रगट भयौ, फुलवा फुलत भांति भांती।
जैसे चकोर चन्द्रमा चितवै तैसे चातक स्वाती॥

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

नैहरवाँ हमकाँ नहीं भावै ।।

साँई की नगरी परम अति सुन्दर, जहाँ कोई जाइ न आवै ।
चाँद सुरज जहाँ पवन न पानी, को संदेस पुचावै ।
दरद यह साँई को सुनावै ।।
आगे चलौं पंथ नहीं सूझै, पीछे दोष लगावै ।
केहि बिधि ससुरे जावँ मोरी सजनी बिरहा जोर जनावै ।
बिषै रस नाच नचावै ।।
बिन सतगुरु अपनो नहिं कोई, जो यह राह बतावै ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सपने न प्रीतम पावै ।
तपनि यह जिय की बुझावै ।।

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

साधव असि तुम्हारि यह माया।
करि उपाय पचि मरिय, तरिय नहिंजबलगि करहु न दाया।
सुनिय, गुनिय, समुझिय समुझाइय, दसा हृदय नहिं आवै।
जेहि अनुभव हित मोह जनित भव, दारुन बिपति सतावै।
ब्रह्म पियूष मधुर सीतल जो पै मन सो रस पावै।
तौ कत मृगजल-रूप विषय कारन निसिवासर धावै।
जेहि के भवन विमल चिन्तामणि सो कत काँच बटोरै।
सपने परबस परै जागि देखत केहि जाइ निहोरै।
ग्यान भक्ति साधन अनेक सब सत्य झूठ कछु नाहीं।
तुलसिदास हरिकृपा मिटै भ्रम यह भरोस मन माहीं।।

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

माधव अब न अधिक तरसैये।

जैसी करत सदा सो आये वही दया दरसैये।
मानि लेउ हम कूर कुढंगी कपटी कुटिल गँवार।
कैसे असरन-सरन कहा तुम जन के तारनहार।
तुम्हरे अछत तीन तेरह यह देस दसा दरसावै।
पै तुमको यहि जनम धरे की तनिकहु लाज न आवै।
आरत तुम्हहिं पुकारत हमसब सुनत न नित्रभुवन राई।
अँगुरी डारि कान में बैठे धरि ऐसी निठुराई।
अजहुँ प्रार्थना यही आप सों अपनो विरद सँवारो।
'सत्य' दीन दुखियन की विपता आतुर आइ निवारौ।।

———

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

काहे न रसना रामहिं गावहि ?
निसदिन पर-अपवाद वृथा कत रटिरटि राग बढ़ावहि ।
नरमुख सुन्दर मंदिर पावन बसि जनि ताहि लजावहि ।
ससि समीप रहि त्यागि सुधाकत रविकरजल कहँ धावहिं ।
कामकथा कलिकैरवचंदिनि सुनत स्रवन दै भावहिं ।
तिनहिं हटकि कहि हरि कलकीरति करनकलंक नसावहिं ।
जातरूपमति जुगुति रुचिरमनि रचिरचि हार बनावहिं ।
सरनसुखद रविकुलसरोजरवि राम नृपहि पहिरावहिं ।
बादविवादबाद तजि भजिहरि सरस चरित चित लावहिं ।
तुलसिदास भव तरहि तिहूँ पुर तू पुनीत जस पावहिं ॥

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

तुम बिन प्यारे कहुँ सुख नाहीं।
भटक्यो बहुत स्वाद-रस लंपट ठौर ठौर जग माहीं।
प्रथम चाव करि बहुत पियारे जाइ जहाँ ललचानें।
तहँ तें फिर ऐसो जिय उचटत आवत उलटि ठिकाने।
जित देखौं तित स्वारथ ही को निरस पुरानी बातें।
अतिहि मलिन व्यवहार देखि कै घिन आवत है तातें।
जानत भले तुम्हारे बिनु सब बादिहिं बीतत साँसै।
'हरीचंद' नहिं छुटत तऊ यह, कठिन मोह की फांसै।

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

प्रार्थना

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्र मरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैर् ।।
वेदैः सांग-पद-क्रमोपनिषदैर् गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो ।
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ।।

ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, रुद्र और मरुतगण दिव्य-स्तोत्रों से जिसकी स्तुति करते हैं, सामवेद का गान करने वाले मुनि अंग, पद, क्रम और उपनिषदों के साथ वेदमंत्रों से जिसकी स्तुति करते हैं, योगीजन समाधि लगाकर परमात्मा में लीन मन द्वारा जिसके दर्शन करते हैं, और देवता और दैत्य जिसकी महिमा का पार नहीं पाते उस परमात्मा को मैं नमस्कार करता हूँ ।

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

स्थित प्रज्ञ के लक्षण !

अर्जुन उवाच--

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ! ।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ॥

अर्जुन बोले--हे केशव ! स्थितप्रज्ञ या समाधिस्थ के लक्षण क्या हैं ? स्थितप्रज्ञ किस तरह बोलता, बैठता और चलता है ?

श्री भगवानुवाच--

प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ ! मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस् तदोच्यते ॥

श्री भगवान बोले--हे पार्थ ! जब मनुष्य मन में पैदा होने वाली सभी कामनाओं को छोड़ देता है, और आत्मा द्वारा आत्मा में ही सन्तुष्ट रहता है, तब वह स्थितप्रज्ञ कहलाता है ।

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

दुःखेष्वनुद्विग्न-मनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।
वीत-राग-भय-क्रोधः स्थितधीर् मुनिरुच्यते ॥

जो दुख से दुखी नहीं होता, सुख की चाह नहीं करता और जो राग, भय और क्रोध से रहित होता है, वह स्थिरबुद्धि मुनि कहलाता है।

यः सर्वत्रानभिस्नेहस् तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥

जो सब कहीं निरासक्त रहकर शुभ या अशुभ पाने पर न खुश होता है, न रंज मानता है, उसकी बुद्धि स्थिर है।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस् तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥

जिस तरह कछुआ सब ओर से अपने अंगो को सिकोड़ लेता है, उसी तरह जब पुरुष अपनी इन्द्रियों को उनके विषय से अलग कर लेता है, तब वह स्थिरबुद्धि कहा जाता है।

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥

जब देहधारी निराहारी रहता है तब उसके विषय शिथिल हो जाते हैं पर रस नहीं छूटता। रस तो परमात्मा का साक्षात्कार होने से ही छूटता है।

यततो ह्यपि कौन्तेय ! पुरुषस्य विपश्चितः ।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥

हे कुन्तीपुत्र ! ज्ञानी पुरुष के यत्नशील रहने पर भी इन्द्रियाँ इतनी मस्त होती हैं कि वे उसके मन को जबरदस्ती खींच ले जाती हैं।

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥

इन सब इन्द्रियों को वश में रखकर योगी को चाहिये कि वह मुझमें तन्मय होकर रहे। क्योंकि अपनी इन्द्रियाँ जिनके वश में हैं उसकी बुद्धि स्थिर है।

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

ध्यायतो विषयान् पुंसः संगस् तेषूपजायते।
संगात् संजायते कामः कामात् क्रोधोऽभिजायते॥

विषयों का चिन्तन करने वाले पुरुष को उन विषयों में आसक्ति पैदा होती है। फिर आसक्ति से कामना पैदा होती है' और कामना से क्रोध पैदा होता है।

क्रोधादभवति संमोहः संमोहात् स्मृति-विभ्रमः।
स्मृति-भ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यति॥

क्रोध से मूढ़ता पैदा होती है, मूढ़ता से स्मृतिलोप, होता है, और स्मृतिलोप से बुद्धि नष्ट हो जाती है, और जिसकी बुद्धि नष्ट हो जाती है, वह मरे के बराबर है।

राग-द्वेष-वियुक्तैस तु विषयान् इन्द्रियैश् चरन्।
आत्मवश्यैर् विधेयात्मा प्रसादम् अधिगच्छति॥

लेकिन जिस मनुष्य का मन उसके वश में होता है और जिसकी इन्द्रियाँ राग-द्वेष-रहित होकर उसके आधीन रहती हैं वह मनुष्य इन्द्रियों से काम लेता हुआ भी चित्त की प्रसन्नता पा जाता है।

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

प्रसादे सर्वदुःखानाम् हानि रस्योयोपजायते ।
प्रसन्न चेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥

चित्त की प्रसन्नता से उसके सब दुख मिट जाते हैं और प्रसन्न मनुष्य की बुद्धि तुरन्त ही स्थिर हो जाती है ।

नास्ति बुद्धिर् अयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना ।
न चाभावयतः शान्तिर् अशान्तस्य कुतः सुखम् ॥

जिसमें समत्व नहीं उसमें विवेक नहीं, भक्ति नहीं । और जिसमें भक्ति नहीं, उसे शान्ति नहीं । और जहाँ शान्ति नहीं वहाँ सुख कहाँ से आये ?

इन्द्रियाणाम् हि चरताम् यन्मनोऽनुविधीयते ।
तदस्य हरति प्रज्ञाम् वायुर् नावम् इवाम्भसि ॥

जिसका मन विषयों में भटकती हुई इन्द्रियों के पीछे दौड़ता है, उसका मन उसकी बुद्धि को उसी तरह जहाँ चाहे खींच ले जाता है, जिस तरह हवा नाव को पानी में खींच ले जाती है ।

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

तस्माद् यस्य महाबाहो ! गृहीतानि सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस् तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥

इसलिए हे महाबाहो ! जिसकी इन्द्रियाँ सब तरफ से विषयों से हटकर उसके वश में आ जाती हैं उसकी बुद्धि स्थिर हो जाती है।

या निशा सर्वभूतानाम् तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः॥

जब सब प्राणी सोये होते हैं तब संयमी पुरुष जागता है। जहाँ लोग जागते होते हैं वहाँ ज्ञानवान मुनि सोता है।

आपूर्यमाणम् अचल-प्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् तद् वत् कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी

नदियों के गिरते रहने से लगातार भरा जाने वाला समुद्र जिस तरह अचल रहता है ,उसी तरह जिस मनुष्य के सारे काम-भोग शान्त हो जाते हैं वही शान्ति पाता है; कामनाओं वाला मनुष्य नहीं।

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

विहाय कामान् यः सर्वान् पुमांश्च चरति निस्पृहः ।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिम् अधिगच्छति ।

सभी कामनायें छोड़कर जो मनुष्य इच्छा, ममता और अहंकार रहित होकर विचरता है वही शान्ति पाता है ।

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ ! नैनां प्राप्य विमुह्यति ।
स्थित्वाऽस्यामअन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणम् एच्छति ।।

हे पार्थ ! ईश्वर को जानने वाली यही ब्राह्मी स्थिति है । इसे पाने पर मनुष्य मोह के वश में नहीं होता, और मरते समय भी यही स्थिति बनी रहे तो वह ब्रह्मनिर्वाण यानी मोक्ष पाता है ।

(श्रीमद्भगवद्गीता)

igitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US/

तुलसी सूक्ति सुधा ।

पर हित बस जिनके मन माँही ।
तिन्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥
* * *

पर हित सरिस, धरम नहिं भाई ।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ॥
* * *

सुमति कुमति सबके उर बसहीं ।
नाथ पुरान निगम अस कहहीं ॥
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना ।
जहां कुमति तहँ विपति निधाना ॥
* * *

धन्य सो भूप नीति जो करई ।
धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई ॥

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

धन्य घरी सोइ जब सत्संगा।
धन्य जन्म हरि भक्ति अभंगा।।

*　　*　　*

साधु चरित सुभ सरिस कपासू।
निरस बिसद गुनमय फल जासू।।
जो सहि दुख पर छिद्र दुरावा।
वंदनीय जेहि जग जस पावा।।

*　　*　　*

जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू।
सो तेहि मिलत न कछु संदेहू।।

*　　*　　*

रघुकुल रीति सदा चलि आई।
प्राण जाहिं पर बचन न जाई।।

*　　*　　*

igitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US/

नहिं असत्य सम पातक पुंजा।
गिर सम होहिं कि कोटिक गुंजा॥
सत्य मूल सब सुकृत सुहाये।
वेद पुरान विदित मुनि गाये॥

* * *

सुनहु राम अब कहउं निकेता।
बसहु जहाँ सिय लखन समेता॥
जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना।
कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना॥
भरहिं निरन्तर होहिं न पूरे।
तिन्ह के हिय तुम्ह कहँ गृह रूरे॥

* * *

लोचन चातक जिन करि राखे।
रहहिं दरस जलधर अभिलाषे॥

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

निदरहिं सरित सिन्धु सर भारी।
रूप विन्दु जल होंहि सुखारी॥
तिन्ह के हृदय सदन सुखदायक।
बसहु बन्धु-सिय-सह रघुनायक॥

* * *

प्रभु प्रसाद सचि सुभग सुवासा।
सादर जासु लहइ नित नासा॥
तुमहिं निवेदित भोजन करहीं।
प्रभु प्रसाद पट्ट भूषन धरहीं॥
सीस नवहिं सुर-गुरु द्विज देखी।
प्रीति सहित करि विनय बिसेखी॥
कर नित करहि राम पद पूजा।
राम भरोस हृदय नहिं दूजा॥
चरन राम तीरथ चलि जाहीं।
राम बसहु तिनके मन माहीं॥

* * *

igitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US/

मंत्रराजु नित जपहिं तुम्हारा।
पूजहिं तुमहिं सहित परिवारा॥
तरपन होम करहिं विधिनाना।
विप्र जेवाँय देहिं बहु दाना॥
तुम्हते अधिक गुरुहिं जिय जानी।
सकल भाव सेवहिं सनमानी॥

* * *

काम क्रोध मद मान न मोहा।
लोभ न छोभ न राग न द्रोहा॥
जिन्ह के कपट दम्भ नहिं माया।
तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया॥

* * *

सबके प्रिय सबके हितकारी।
दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी॥
कहहि सत्य प्रिय बचन उचारी।
जागत सोवत सरन तुम्हारी॥

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

तुम्हहिं छाँड़ि गति दूसर नाहीं।
राम बसहु तिन्हके मन माहीं॥

*　　　*　　　*

जननी सम जानहिं पर नारी।
धन पराय बिष तें बिष भारी॥
जे हरषहिं पर संपति देखी।
दुखित होहिं पर विपति विसेखी।
जिन्हहिं राम तुम प्रान पियारे॥
तिन्ह के मन सुभ सदन तिहारे॥

*　　　*　　　*

अवगुन तजि सब के गुन गहहीं।
बिप्र धेनु हित संकट सहहीं॥
नीति निपुन जिन्ह कह जग लीका।
घर तुम्हार तिन्ह कर मन नीका॥

itization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

गुन तुम्हार समुझहिं निज दोसा।
जेहि सब भांति तुम्हार भरोसा॥
राम भगत प्रिय लागहिं जेही।
तेंहि उर बसहु सहित बैदेही॥

* * *

जाति पांति धनु धरमु बड़ाई।
प्रिय परिवार सदनु सुखदाई॥
सब तजि तुमहि लहइ लव लाई।
तेंहि के हृदय रहहु रघुराई॥

* * *

सो जानै जेहि देहु जनाई।
जानत तुमहि, तुमहि ह्वै जाई॥

---

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

विजय-रथ

रावनु रथी विरथ रघुवीरा ।
देख विभीषन भयउ अधीरा ॥
अधिक प्रीति मन भा संदेहू ।
बंदि चरन कह सहित सनेहू ॥
*　　　　*　　　　*

नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना ।
केहि बिधि जितब वीर बलवाना ॥
*　　　　*　　　　*

सुनहु सखा कह कृपा निधाना ।
जेहि जय होइ सो स्यंदन आना ॥
सौरज धीरज तेहि रथ चाका ।
सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका ॥

itization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

बल विवेक दम परहित घोरे।
छमा कृपा समता रजु जोरे।।
ईस भजन सारथी सुजाना।
बिरति चर्म संतोष कृपाना।।
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा।
बल विग्यान कठिन कोदंडा।।
अमल अचल मन त्रोन समाना।
सम जम नियम सिलीमुख नाना।।
कवच अभेद बिप्र गुरु पूजा।
एहि सम विजय उपाय न दूजा।।
महा अजय संसार रिपु, जीति सकइ को वीर।
जाके अस रथ होइ दृढ़, सुनहु सखा मति धीर।।

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

कबीर–बानी !

सतगुरु सम को है सगा, साधू सम को दात ।
हरि समान को है हितू, हरिजन सम को जात ॥

*　　　*　　　*

गुरु गोबिंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाँय ।
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोबिंद दियो बताय ॥

*　　　*　　　*

लेने को सतनाम है, देने को अनदान ।
तरने को आधीनता, बूड़न को अभिमान ॥

*　　　*　　　*

दुख में सुमिरन सब करैं, सुख में करै न कोय ।
जो सुख में सुमिरन करै, दुख काहे को होय ॥

*　　　*　　　*

itization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

कबिरा गर्ब न कीजिये, काल गहे कर केस।
ना जानौं कित मारिहै, क्या घर क्या परदेस॥

*   *   *

कबिरा प्याला प्रेम का, अंतर लिया लगाय।
रोम रोम में रमि रहा, और अमल क्या खाय॥

*   *   *

कहना था सो कह दिया, अब कछु कहा न जाय।
एक रहा दूजा गया, दरिया लहर समाय॥

*   *   *

लागी लागी का करै, लागी बुरी बलाय।
लागी सोई जानिये, जो वारपार ह्वै जाय॥

*   *   *

सोवौं तो सुपने मिलैं, जागौं तो मनमाहिं।
लोचन राता सुधि हरी, बिछुरत कबहूँ नाहिं॥

*   *   *

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

सुपने में साँई मिले, सोवत लिया जगाय।
आँखि न खोलूं डरपता, मत सुपना ह्वै जाय॥
*　　　　*　　　　*

लिखा लिखी की है नहीं, देखा देखी बात।
दुलहा दुलहिन मिलि गये, फीकी परी बरात॥
*　　　　*　　　　*

कबीरा बादल प्रेम का, हम पर बरष्या आइ।
अंतरि भीगी आतमा, हरी भई बन राइ॥
*　　　　*　　　　*

आप छके नैंना छके, और छके सब गात।
जा तन चितवत नैनभरि, रोम रोम छकि जात॥
*　　　　*　　　　*

मांस गया पिंजर रहा, ताकन लागे काग।
साहिब अजहुं न आइया, मंद हमारे भाग॥
*　　　　*　　　　*

itization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

प्रीतम हम तुम एक हैं, कहन सुनन को दोय।
मन से मन को तौलिये, दो मन कभी न होय॥

*　　　　*　　　　*

हँसि हँसि कन्त न पाइया, जिन पाया तिन रोइ।
जो हाँसे ही हरि मिलै, तौ न दुहागिन होइ॥

*　　　　*　　　　*

लाली मेरे लाल की, जित देखौं तित लाल।
लाली देखत ह्वै गई, मैं भी लाल गुलाल॥

*　　　　*　　　　*

प्रीतम को पतियाँ लिखूं, जो कहुँ होंय विदेश।
तन में, मन में, नयन में, ताको कहा संदेश॥

*　　　　*　　　　*

नयनों की करि कोठरी, पुतली पलंग बिछाय।
पलकों की चिक डारि के, पिय को लिया रिझाय॥

*　　　　*　　　　*

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

हाड़ जरै ज्यों लाकड़ी, केस जरै ज्यों घास।
सब जग जरता देखि कर, भये कबीर उदास ।।

*   *   *

पानी केरा बुदबुदा, अस मानुष की जात।
देखत ही मिट जायगी, ज्यों तारा परभात ।।

*   *   *

रात गँवाई सोय करि, दिवस गँवायो खाय।
हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदले जाय ।।

*   *   *

कबिरा आप ठगाइये, और न ठगिये कोय।
आप ठगे सुख ऊपजै, और ठगे दुख होय ।।

*   *   *

माली आवत देखि कै, कलियाँ करी पुकार।
फूली फूली चुन लिये, कालिह हमारी बार ।।

*   *   *

itization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

और कर्म सब कर्म है, भक्ति कर्म निष्कर्म।
कहै कबीर पुकारि कै, भक्ति करो तजि धर्म॥

*   *   *

लगी लगन छूटै नहीं, जीभ चोंच जरि जाय।
मीठा कहा अँगार में, जाहि चकोर चबाय॥

*   *   *

ज्यों तिरिया पीहर बसै, सुरति रहै पिय माँहि।
ऐसे जन जग में रहैं, हरि को भूलैं नाँहि॥

*   *   *

कबिरा हँसना दूर करु, रोने से करु प्रीत।
बिन रोये क्यों पाइये, प्रेम पियारा मीत॥

*   *   *

सुखिया सब संसार है, खावै औ सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै औ रोवै॥

*   *   *

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

यह तनु काचा कुम्भ है, चोट चहूँ दिसि खाइ।
एक राम के नाँव बिन, जदि तदि परलै जाइ ।।

*   *   *

कबिरा बैद बुलाइया, पकरि के देखी बाँहि।
बैद न वेदन जानई, करक करेजे माँहि ।।

*   *   *

जाहु बैद घर आपने, तेरा किया न होय।
जिन या वेदन निर्मई, भला करेगा सोय ।।

*   *   *

यह तो घर है प्रेम का खाला का घर नाहिं।
सीस उतारै भुंइ धरै, तब पैठे घर माहिं ।।

*   *   *

प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा परजा जेहि रुचै, सीस देइ लै जाय ।।

*   *   *

itization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

छिनहिं चढ़े छिन ऊतरै, सो तो प्रेम न होय।
अघट प्रेम पिंजर बसै, प्रेम कहावै सोय॥

*　　*　　*

प्रेम प्रेम सब कोइ कहै, प्रेम न चीह्नै कोय।
आठ पहर माता रहै, प्रेम कहावै सोय॥

*　　*　　*

जब मैं था तब गुरु नहीं, अब गुरु हैं हम नाहिं।
प्रेम गली अति साँकरी, तामें दो न समाहिं॥

*　　*　　*

जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान।
जैसे खाल लुहार की, साँस लेत बिन प्रान॥

*　　*　　*

प्रेम तो ऐसा कीजिये, जैसे चन्द चकोर।
घी चूं भुइं में गिरै, चितवै वाही ओर॥

*　　*　　*

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

जहाँ प्रेम तहँ नेम नहिं, तहाँ न बुध व्यौहार ।
प्रेम मगन जब मन भया, कौन गिनै तिथि बार ॥

*　　*　　*

प्रेम छिपाये ना छिपै, जा घट परघट होय ।
जो पै मुख वोलौ नहीं, नैन देत हैं रोय ॥

*　　*　　*

पीया चाहे प्रेम रस, राखा चाहे मान ।
एक म्यान में दो खड्ग, देखा सुना न कान ॥

*　　*　　*

जिनके नौबत बाजती, मँगल बँधते वारि ।
एकै हरि के नाँव बिन, गये जन्म सब हारि ॥

*　　*　　*

कबिरा यह तन जात है, सकै तो लेहु बहोड़ि ।
नागे हाथे ते गये, जिनके लाख करोड़ि ॥

*　　*　　*

itization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

साँई इतना दीजिये, जामें कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय॥

* * *

जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहिरे पानी पैठि।
हौ बौरी ढूंढ़न गई, रही किनारे बैठि॥

* * *

सिहन के नहिं लोंहड़े, हंसन की नहिं पाँत।
लालन की नहिं बोरियाँ, साधु न चलैं जमात॥

* * *

कबिरा संगत साधु की, हरै और की व्याधि।
संगत बुरी असाधु की, आठो पहर उपाधि॥

* * *

केला तबहिं न चेतिया, जब ढिग लागी बेरि।
अब के चेते क्या भया, काँटन लीन्हा घेरि॥

* * *

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप ।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप ॥

*　　　　*　　　　*

सहज मिलै सो दूध सम, माँगाँ मिलै सो पानि ।
कह कबीर वह रक्त सम, जा में ऐंचा तानि ॥

*　　　　*　　　　*

जो तो कूं काँटा बुवै, ताहि बोव तू फूल ।
तोकों फूल को फूल हैं, वाको हैं तिरसूल ॥

*　　　　*　　　　*

दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय ।
बिना जीव की साँस सों लोह भसम ह्वै जाय ॥

*　　　　*　　　　*

ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय ।
औरन को सीतल करै, आपहु सीतल होय ॥

*　　　　*　　　　*

itization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

सीलवंत सब तें बड़ा, सर्व रतन की खानि।
तीन लोक की संपदा, रही सील में आनि॥

*　　　*　　　*

गोधन, गजधन, बाजधन, और रतन धन खान।
जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान॥

*　　　*　　　*

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजौं आपना, मुझ सा बुरा न कोय॥

*　　　*　　　*

कामी, क्रोधी, लालची, इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करै कोइ सूरमा, जाति बरन कुल खोय॥

*　　　*　　　*

कबीर नौबत आपणी, दिन दस लेहु बजाय।
ए पुर पाटन ए गली, बहुरि न देखे आय॥

*　　　*　　　*

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

काम, क्रोध, मद, लोभ की, जब लगि घट में खान ।
कहा मूरख कहा पंडिता, दोनों एक समान ।।

*　　　*　　　*

साखी आँखी ज्ञान की, समुझि देखु मनमाँहि ।
बिन साखी संसार कौ, झगरा छूटत नाँहि ।।

*　　　*　　　*

मंजिल तो है नेह का, मति कोइ पैठे धाय ।
जो कोइ पैठे धाइ के, बिन सिर सेती जाय ।।

*　　　*　　　*

मैं सिरजौं मैं मारहूँ, मैं जारों मैं खांव ।
जल थल में मैं रमि रह्यौ, मोर निरंजन नाँव ।।

*　　　*　　　*

हद्द छांड़ि बेहद गया, किया सुन्नि असनान ।
मुनिजन महल न पावई, तहाँ किया बिश्राम ।

*　　　*　　　*

itization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

सहजै सहजै सब गये, सुत वित कामिणि काम ।
एकमेक ह्वै मिलि रह्यौ, दास कबीरा राम ।।

*   *   *

सहज सहज सब कोइ कहै, सहज न चीन्है कोइ ।
जिन्ह सहजै हरि जी मिलैं, सहज कहीजै सोय ।।

*   *   *

कहै कबीर बिचारि करि, जिनि कोई खोजै दूरि ।
ध्यान धरौं मन सुद्ध करि, राम रह्या भरपूरि ।।

*   *   *

कहै कबीर बिचारि करि, झूठा लोही चाम ।
जो या देही रहति है, सो है रमिता राम ।।

*   *   *

ऐसा कोई ना मिलै, जासों रहिये लागि ।
सब जग जलता देखिया, अपनी अपनी आगि ।।

*   *   *

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

ऐसा कोई ना मिलै, जासों कहूँ निसंक।
जासों हिरदै की कहूँ, सो फिरि मारै डंक॥

* * *

प्रेमी ढूंढ़त मैं फिरौं, प्रेमी मिलै न कोय।
प्रेमी को प्रेमी मिलै, तब सब विष अमृत होय॥

* * *

भली भई जो गुरु मिल्या, नहिं तर होती हाँणि।
दीपक दृष्टि पतंग ज्यूं, परता पूड़ी जाँणि॥

* * *

माया दीपक नर पतंग, भ्रमि भ्रमि इवै पडन्त।
कहै कबीर गुरु ग्यान कैं, एक आध उबरंत॥

* * *

सारा सूरा बहु मिले, वाइल मिलै न कोइ।
घाइल ही घाड़ो मिल, तब राम भगति दृढ़ होइ॥

* * *

itization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

कबिरा सब जग हंडिया, मंदिल कंध चढ़ाइ।
हरि बिन अपना कोइ नहिं, देखे ठोकि बजाइ ॥

*   *   *

कबिरा भया है केतकी, भँवर भये सब दास।
जहँ जहँ भगति कबीर की, तहँ तहँ राम निवास ॥

*   *   *

भाग बिना नहिं पाइये, प्रेम प्रीति की भक्त।
बिना प्रेम नहिं भक्ति कछु, भक्ति पर्‌यो सब जक्त ॥

*   *   *

मैं अबला पिउ पिउ करूँ, निर्गुन मेरा पीव।
शून्य सनेही राम बिन, देखूं और न जीव ॥

*   *   *

अविनासी की सेज का, कैसा है उनमान।
कहिबे की सोभा नहीं, देखे ही परमान ॥

*   *   *

ization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

अविनासी की सेज पर, केलि करै आनन्द।
कहै कबीर वा सेज पर, बिलसत परमानन्द।।

*　　*　　*

है कोई ऐसा पर उपगारी, हरि सो कहै सुनाइ रे।
ऐसे हाल कबीर भये हैं, बिनु देखे जिय जाइ रे।।

*　　*　　*

पूरेसूं परचा गया, सब दुख मेल्या दूरि।
निर्मल कीन्ही आतमा, ताथैं सदा हूजूरि।।

*　　*　　*

हम घर जारा आपना, लिया मुराड़ा हाथ।
अब घर जारौं तासु का, जो चलै हमारे साथ।।

*　　*　　*

आगि आँच सहना सुगम, सुगम खड्ग की धार।
नेह निवाहन एक रस, महा कठिन व्यवहार।।

*　　*　　*

zation by American Academy of Indic Studies. AAIS(

साईं सेंति न पाइये, बाताँ मिलै न कोय।
कबिरा सौदा राम सों, सिर बिन कदै न कोय॥

* * *

कबिरा यहु घर प्रेम का, खाला का घर नाहिं।
सीस उतारै हाथि करि, सो पैठे घरमाँहि॥

* * *

कबिरा निज घर प्रेम का, मारग अगम अगाध।
सीस उतारि पगतल धरै, तब निकट प्रेम का स्वाद॥

* * *

कबिरा रेख सिंदूर की, काजल दिया न जाय।
नैनु रमइया रमि रहा, दूजा कहाँ समाय॥

* * *

नैना अंतर आव तूं, ज्यों ही नैन झंपेउँ।
ना हौं देखूं और कूं, ना तुझ देखन देउँ॥

* * *

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

मन परतीति न प्रेम रस, ना इस तन में ढंग।
क्या जानौं उस पीव सूं, कैसी रहसी रंग॥

*　　　*　　　*

पढ़ि पढ़ि के पत्थर भया, लिखि लिख भया जु ईंट।
कहै कबीरा प्रेम की, लगी न एकौ छींट॥

*　　　*　　　*

पोथा पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय॥

*　　　*　　　*

जाके मन विश्वास है, सदा गुरू है संग।
कोटि काल झकझोरहिं, तऊ न होय चित भंग॥

*　　　*　　　*

आंखड़ियाँ झाइं पड़ी, पन्थ निहारि निहारि,।
जीभड़ियाँ छाला पड्या, राम पुकारि पुकारि॥

*　　　*　　　*

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

हँसि हँसि कंत न पाइये, जिन पाया तिन रोइ ।
जो हाँसे ही हरि मिलै, तो न दुहागिनि कोइ ॥

*   *   *

बड़ा हुआ तो क्या आ, जैसे पेड़ खजूर ।
पंथी को छाया न फल लागै अति दूर ॥

*   *   *

जो जल बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़ै दाम ।
दोऊ हाथ उलीचिये, यह सज्जन को काम ॥

*   *   *

मूरख को समझावते, ज्ञान गांठि को जाय ।
कोइला होइ न ऊजरो, नौ मन साबुन लाय ॥

*   *   *

बकरी पाती खात है, ताकी काढ़ी खाल ।
जो बकरी को खात है, ताको कौन हवाल ॥

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

दोहा

अब रहीम मुश्किल पड़ी, गाढ़े दोऊ काम ।
साँचे से तो जग नहीं, झूठे मिलै न राम ।।

*   *   *

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय ।
रहिमन मूलहि सींचिबो, फूलै फलै अघाय ।।

*   *   *

चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध नरेस ।
जापर बिपदा पड़त है, सो आवत यहि देस ।।

*   *   *

छिमा बड़न को चाहिए, छोटेन को उतपात ।
का रहीम हरि को घट्यो, जो भृगु मारी लात ।।

*   *   *

जे गरीब पर हित करैं, ते रहीम बड़ लोग ।
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग ।।

*   *   *

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग ।
चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ॥

*   *   *

धूर धरत निज सीस पै, कहु रहीम केहि काज ।
जेहि रज मुनिपत्नी तरी, सो ढूंढ़त गजराज ॥

*   *   *

वसि कुसंग चाहत कुशल, यह रहीम जिय सोस ।
महिमा घटी समुद्र की रावन बस्यो परोस ॥

*   *   *

रहिमन अँसुआ नैन ढरि, जिय दुख प्रकट करेइ ।
जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कहि देइ ॥

*   *   *

रहिमन चुप ह्वै बैठिये, देखि दिनन को फेर ।
जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहै बेर ॥

*   *   *

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून ।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून ।।

* * *

रहिमन ते नर मरि चुके, जे कहुँ माँगन जाँहि ।
उनते पहिले वे मुए, जिन मुख निकसत नाँहि ।।

* * *

राम न जाते हरिन संग, सीय न रावण साथ ।
जो रहीम भावी कतहुँ, होत आपुने हाथ ।।

* * *

रहिमन मोहि न सुहाय, अमी पियावत मान बिनु ।
बरु विष देइ बुलाय, मान सहित मरिबो भलो ।।

* * *

कहु रहीम का करि सकें, जारी, चोर लबार ।
जो पतराखन हार है, माखन-चाखनहार ।।

* * *

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

हरि तुम सों कीजत यहैं, बिनती बार हजार ।
जेहि-तेहि भांति डरचो रहौ, परचो रहौ दरबार ।।

*　　　　*　　　　*

बहुत दिनन की जोवती, रटत तुम्हारो नाम ।
जिउ तरसै तुव मिलन को, मन नाहीं विश्राम ।।

*　　　　*　　　　*

नैननि तो झरि लाइया, रटत रहैं निसिबास ।
पपिहा ज्यों पिउ पिउ रटै, पियामिलन की आस ।।

*　　　　*　　　　*

तुलसी अपने राम को, रीझ भजो कै खीझ ।
उलटो सीधो जामिहै, खेत परे को बीज ।।

*　　　　*　　　　*

बनै सो रघुबर सो बनै, कै बिगरे भरपूर ।
तुलसी बनै जो और सों, ता बनिवे में धूर ।।

*　　　　*　　　　*

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

चातक सुतहिं सिखावहीं, आनि धर्म जनि लेहु ।
अपने कुल की रीति यह, स्वाति बूंद सों नेहु ।।

* * *

राम-नाम-मनि दीप धरु, जीह देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर बाहरहु, जो चाहसि उजियार ।।

* * *

मो सम दीन न दीन हित, तुम समान रघुबीर ।
अस विचारि रघुवंश माणि, हरहु विषम भवपीर ।।

* * *

कामिहि नारि पियारि जिमि, लोभिहि के जिमि दाम ।
तिमि रघुनाथ निरन्तरहु, प्रिय लागहु मोहि राम ।।

* * *

हरि-पद प्रीति न होय, बिन हरि-गुन गाये सुने ।
भव ते छुटत न कोय, बिना प्रीति हरिपद भये ।।

* * *

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

जहां काम तहँ राम नहिं, जहां राम नहिं काम।
एक संग निबहत नहीं, तुलसी छाया घाम ॥

* * *

सेवक दुखते दुखित है, स्वामि विकल ह्वै जाइ।
दुःख निवारे शीघ्र ही, करुना गुन सो आइ ॥

* * *

बार बार वर मांगहुँ, हर्षि देहु श्री रंग।
पद सरोज अनपावनी, भक्ति सदा सत्संग ॥

---

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

बुद्ध-वाणी

(१)

सभी धर्म पहिले मन में उत्पन्न होते हैं। मन ही मुख्य है वे मनोमय हैं। जब आदमी मलिन मन से बोलता व कार्य करता है तब दुख उसके पीछे वैसे ही हो लेता है जैसे गाड़ी के पहिये बैलों के पैरों के पीछे पीछे।

(२)

सभी अवस्थायें पहले मन ही में उत्पन्न होती हैं। मन ही मुख्य है, वे मनोमय हैं। जब आदमी स्वच्छ मन से बोलता व कार्य करता है, तब सुख उसके पीछे वैसे ही हो लेता है जैसे कभी साथ न छोड़ने वाली छाया।

gitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(US

(३)

मुझे गाली दी। मुझे मारा। मुझे हराया। मुझे लूट लिया। जो ऐसा सोचा करते हैं उनका वैर कभी शान्त नही होता।

(४)

वैर वैर से शान्त नहीं होता। अवैर से ही शान्त होता है। यही संसार का सनातन नियम है।

(५)

यदि घर की छत ठीक न हो तो जिस प्रकार उसमें वर्षा का जल प्रवेश कर जाता है उसी प्रकार यदि संयम का अभ्यास न हो तो मन में राग प्रविष्ट हो जाता है।

(६)

पापी मनुष्य दोनों जगह शोक करता है यहाँ भी और परलोक में भी। अपने दुष्ट कर्मों को देख कर दुखित होता है, पीड़ित होता है।

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

शुभ कर्म करने वाला मनुष्य दोनों जगह प्रसन्न रहता है, यहाँ भी और परलोक में भी। अपने शुभ कर्म को देखकर मुदित होता है, प्रमुदित होता है।

(८)

धर्मग्रन्थों का कितना ही पाठ करे लेकिन यदि प्रमाद के कारण मनुष्य उन धर्मग्रन्थों के अनुसार आचरण नहीं करता तो दूसरे की गौवें गिनने वाले ग्वालों की तरह वह श्रमणत्व का अधिकारी नहीं है।

(९)

धर्मग्रन्थों का चाहे थोड़ा ही पाठ करे लेकिन यदि राग, द्वेष तथा मोह से रहित कोई व्यक्ति धर्म के अनुसार आचरण करता है तो ऐसा बुद्धिमान, अनासक्त यहाँ वहाँ, दोनों लोकों में, भोगों के पीछे न भागता हुआ धर्म का भागी होता है।

igitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA

(१०)

ध्यान करने वाले, जागरूक, नित्य दृढ़ पराक्रम में लगे रहने वाले, धीर जन ही, अनुत्तर योग क्षेम निर्वाण को प्राप्त करते हैं।

(११)

उद्योगी, जागरूक, पवित्र कर्म करने वाले, सोच समझ कर काम करने वाले, संयमी, धर्मानुसार जीविका चलाने वाले, अप्रमादी मनुष्य के यश की वृद्धि होती है।

(१२)

प्रमाद मत करो। काम भोगो में मत फँसों। प्रमाद रहित हो ध्यान करने से विपुल सुख के भागी बनोगे।

(१३)

चित्त चंचल है, चपल है, दुर-रक्ष्य है, दुर-निवार्य है। मेधावी पुरुष उसे इसी प्रकार सीधा करता है जैसे वाण बनाने वाला वाण को।

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(१४)

कठिनाई से निग्रह किये जा सकने वाले, शीघ्रगामी, जहाँ चाहे वहाँ चले जाने वाले चित्त का दमन करना अच्छा है। दमन किया हुआ चित्त सुख देने वाला होता है।

(१५)

जिसका चित्त मल रहित है, जिसका चित्त स्थिर है, जो पाप-पुण्य विहीन है, उस जागरूक पुरुष के लिये भय नहीं है।

(१६)

अहो ! यह तुच्छ शरीर शीघ्र ही चेतना रहित हो, काठ की भांति, धरती पर गिर पड़ेगा।

(१७)

न माता-पिता, न दूसरे रिश्तेदार, आदमी की उतनी भलाई करते हैं जितनी भलाई सन्मार्ग पर गया हुआ चित्त करता है।

igitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA

न दूसरों के दोष, न दूसरों के कृत-अकृत को देखो। अपने ही कृत-अकृत को देखते रहो।

(१९)

जागते रहने वाले की रात लंबी होती है, थके हुए का योजन लंबा होता है, इसी प्रकार सद्धर्म को न जानने वाले मूर्ख आदमी का साँसारिक आवागमन लम्बा हो जाता है।

(२०)

यदि विचरण करते हुए अपने से श्रेष्ठ व अपने जैसे साथी को न पाये तो आदमी दृढ़तापूर्वक अकेला ही रहे। मूर्ख की संगति अच्छी नहीं।

(२१)

'पुत्र मेरे हैं, धन मेरा है' सोच मूर्ख आदमी दुखित होता है। जब शरीर तक अपना नहीं है तब पुत्र कहाँ और धन कहाँ?

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(२२)

यदि मूर्ख अपने को मूर्ख समझे तो उतने अंश में तो बुद्धिमान है। असली मूर्ख तो वह है जो मूर्ख होते हुए भी अपने को पंडित समझता है।

(२३)

उस काम का करना अच्छा नहीं जिसे करके पछताना पड़े और जिसके फल को रोते हुए भोगना पड़े।

(२४)

जब तक पापकर्म फल नहीं देते तब तक मूर्ख उन्हें मधु की तरह मीठा समझता है। लेकिन जब पापकर्म फल देता है तब उसे दुख होता है।

(२५)

लाभ का रास्ता दूसरा है और निर्वाण का दूसरा। इसे इस प्रकार जानकर बुद्ध का शिष्य भिक्षु सत्कार की इच्छा न करे--विवेक व एकान्तचर्या की वृद्धि करे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(२६)

जो आदमी अपना दोष दिखाने वाले को धन दिखाने वाले की तरह समझे, जो संयम के समर्थक मेधावी पंडित की संगति करे, उसका कभी अकल्याण नहीं हो सकता।

(२७)

न दुष्ट मित्रों की संगति करे, न अधम पुरुषों की संगति करे। अच्छे मित्रों की संगति करे, उत्तम पुरुषों की संगति करे।

(२८)

जो पार पहुँचते हैं वह तो मनुष्यों में थोड़े ही हैं। बाकी आदमी तो किनारे पर ही दौड़ते रहते हैं।

(२९)

सतपुरुष आसक्त नहीं होते। वह काम भोगों के लिए बात नहीं बनाते। उन्हें चाहे दुख हो चाहे सुख, वे विकार को प्राप्त नहीं होते।

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(३०)

सारथी द्वारा सुशिक्षित घोड़ों की तरह जिसकी इन्द्रियाँ शान्त हैं जिसका अभिमान नष्ट हो गया है, जो आश्रव-रहित हैं, ऐसे पुरुष की देवता भी स्पृहा करते हैं।

(३१)

एक आदमी संग्राम में लाखों आदमियों को जीत ले और एक दूसरा अपने आप को जीत ले। यह दूसरा आदमी ही सच्चा संग्राम विजयी है।

(३२)

जो अभिवादन शील है, जो नित्य बड़ों की सेवा करता है, उसके आयु, वरण तथा बल में वृद्धि होती है।

(३३)

आलसी और अनुद्योगी के सौ वर्ष के जीवन से दृढ़तापूर्वक उद्योग करने वाले का एक दिन का जीवन अच्छा है।

igitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA

(३४)

शुभ कर्म करने में जल्दी करो। पापों को मन से हटाओ। शुभ कर्म करने में ढील करने पर, मन पाप में रत होने लगता है।

(३५)

यदि पाप करे तो उसे फिर फिर न करे। उसमें रत न होवे। पाप का संचय दुख का कारण होता है।

(३६)

यदि शुभ कर्म करे तो उसे फिर फिर करे। उसमें रत होवे। पुण्य का संचय सुख का कारण होता है।

(३७)

जो शुद्ध, निर्मल, दोष रहित मनुष्य को दोषी ठहराता है उस दोषी ठहराने वाले मूर्ख को ही पाप लगता है। जैसे हवा की दिशा के विरुद्ध फेंकी हुई धूल फेंकने वाले पर पड़ती है।

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(३८)

सभी दण्ड से डरते हैं, सभी को मृत्यु से भय लगता है और सभी को जीवन प्रिय है। इसलिए सभी को अपना जैसा समझ न किसी को मारों न किसी को मरवाओ।

(३९)

पानी ले जाने वाले पानी ले जाते हैं, बाण बनाने वाले बाण नवाते हैं, बढ़ई लकड़ी नवाते हैं और सुव्रती जन अपना दमन करते हैं।

(४०)

सब कुछ जल रहा है पर तुम्हें आनन्द और हँसी सूझ रही है। अंधकार से घिरे रह कर भी तुम प्रदीप को नहीं खोजते।

igitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA

(४१)

इस विचित्र शरीर को देखो जो व्रणों से युक्त है, जो फूला हुआ है जो रोगी है, जो नाना प्रकार के संकल्पों से युक्त है, जिसकी स्थिति निश्चित नहीं है।

(४२)

जिन्होंने ब्रह्मचर्य का पालन नहीं किया, जिन्होंने जवानी में धन नहीं कमाया, वह बिना मछली के तालाब में बूढ़े क्रौंच पक्षी की तरह ध्यान लगाते हैं।

(४३)

गृह कारक को ढूंढ़ते हुए मैं अनेक जन्मों तक लगातार संसार में दौड़ता रहा। बार बार जन्म लेना दुःख है। गृहकारक तू दिखायी दे गया। अब फिर घर नहीं बना सकेगा। तेरी सब कड़ियाँ टूट गयीं। घर का शिखर बिखर गया। चित्त संस्कार रहित हो गया। तृष्णाओ का क्षय हो गया।

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(४४)

जय से वैर पैदा होता है। पराजित दुखी रहता है। जय पराजय दोनों को छोड़कर शान्त मनुष्य सुखपूर्वक सोता है।

(४५)

निःरोग रहना सबसे बड़ा लाभ है। सन्तुष्ट रहना परम धर्म है। विश्वास सबसे बड़ा बन्धु है। निर्वाण सबसे बड़ा सुख है।

(४६)

एकान्तवास और शान्ति के रस को पान कर आदमी निडर होता है और धर्म के प्रेम रस को पान कर निष्पाप।

(४७)

सत्पुरुषों का दर्शन अच्छा है, सत्पुरुषों की संगति सुखकर है मूर्खों का दर्शन न होने से आदमी सुखी रहता है।

igitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA

(४८)

प्रियों का साथ न करो। और अप्रियों का साथ कभी न करो। प्रियों का अदर्शन दुखद होता है और अप्रियों का दर्शन।

(४९)

इसलिए किसी को प्रिय न बनाओ, प्रिय का नाश बुरा होता है। उनके दिल में गाँठ नहीं होती जिनके प्रिय अप्रिय नहीं होते।

(५०)

प्रिय से शोक उत्पन्न होता है, प्रिय से भय। जो प्रिय से मुक्त है उसे शोक कहाँ, भय कहाँ ?

(५१)

जो शीलवान हैं, विद्वान हैं, जो धर्म में स्थित हैं, जो सत्यवादी हैं, जो अपने काम को करने वाले हैं, ऐसे आदमी को लोग प्यार करते हैं।

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(५२)

क्रोध को अक्रोध से, बुराई को भलाई से, कंजूसपन को दान से और झूठ को सत्य से जीतो।

(५३)

सत्य बोलो, क्रोध न करो, माँगने पर थोड़ा भी दो। इन तीन बातों को करने से आदमी देवताओं के पास जाता है।

(५४)

काया की चंचलता से बचो। काया का संयम रक्खो शारीरिक दुश्चरित्र को छोड़कर शरीर से सदाचरण करो।

(५५)

वाणी की चंचलता से बचो। वाणी का संयम रक्खो। वाणी का दुश्चरित्र छोड़कर वाणी का सदाचरण करो।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(५६)

मन की चंचलता से बचो। मन का संयम रक्खो। मन का दुश्चरित्र छोड़कर मानसिक सदाचरण करो।

(५७)

जो काय से संयत हैं, वाणी से संयत हैं, मन से संयत हैं वे ही अच्छी तरह से संयत कहे जा सकते हैं।

(५८)

बहुत बोलने से पंडित नहीं होता। जो क्षेमवान, अवैरी और निर्भय होता है, वही पंडित कहलाता है।

(५९)

जो पुण्य और पाप से परे हो गया है, जो ब्रह्मचारी है, जो ज्ञानपूर्वक लोक में विचरता है वह भिक्षु है।

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

(६०)

भिक्षुओ ! शीलवान होने से, व्रती होने से, बहुश्रुत होने से, समाधिलाभी होने से, व एकान्तवासी होने से मैं जनों से असेवित नैष्कर्म्य सुख का लाभ ले रहा हूँ। जब तक चित्त के मलों का त्याग न कर लो तब तक चैन न लो।

(६१)

थोड़े सुख के परित्याग से यदि बहुत सुख की प्राप्ति होती दिखाई दे तो बुद्धिमान को चाहिए कि बहुत सुख के लिए थोड़े सुख का त्याग कर दे।

(६२)

सत्पुरुष हिमालय पर्वत की तरह दूर से प्रकाशित होते हैं। असत्पुरुष रात में फेंके बाण की तरह दिखाई नहीं देते।

igitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA

जो फटे पुराने वस्त्रों को धारण करता है, जो पतला दुबला है, जिसकी नसें दिखाई देती हैं, जो बन में अकेला ध्यान करता है, वह ब्राह्मण है। ब्राह्मणी माता से पैदा होकर कोई ब्राह्मण नहीं होता। जिसके पास कुछ नहीं है वही ब्राह्मण है। जो अक्रोधी है, व्रती है, सदाचारी है, तृष्णारहित है, संयमी है वही ब्राह्मण है। कमल के पत्ते पर बूंद की तरह जो काम भोगों से अलिप्त है वही ब्राह्मण है। जो गम्भीर प्रज्ञावाला है, जो मेधावी है, जो मार्ग कुमार्ग को पहचानता है जो असंग्रही है, वह ब्राह्मण है। जो इच्छा रहित है, आसक्ति रहित है, जिसने गाढ़े अमृत को पी लिया है वह ब्राह्मण है। जो काम भोगों को छोड़ कर अनिकेतन हो, परिव्राजक बन गया है, जिसका पुनर्जन्म क्षीण हो गया है, और जिसने निर्वाण प्राप्त कर लिया है वही सच्चा ब्राह्मण कहा जा सकता है।

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U

सिटीज़न प्रेस, कानपुर ।

igitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA

Scanned

tization by American Academy of Indic Studies. AAIS(U